सन्मति प्रकाशन नं० ४

जैन ग्रंथ और ग्रंथकार

संपादक

फतेहचंद बेलानी

न्यायतीर्थ, व्याकरणतीर्थ, न्यायरत्न,

अक्तूबर १९५०

डेढ़ रुपया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निवेदन

श्री फतेहचन्द बेलानी की प्रस्तुत पुस्तिका उन्होंने १९४६ ई० में प्रकाशित करने को दी थी। वह अब प्रकाशित हो रही है अतएव इसमें हाल में जो नई सामग्री, जैसे आमेर ग्रन्थागार की सूची और प्रशस्तिसंग्रह आदि, उपलब्ध हुई है, उसका उपयोग नहीं हुआ है। इतना होते हुए भी जैन ग्रन्थ और ग्रन्थकारों का यह संकलन हिन्दीभाषी विद्वानों को जैन साहित्य का शताब्दी के अनुसार परिचय देने में एक मात्र साधन है इसे स्वीकार करना होगा। इस छोटी सी पुस्तिका को अपनी संशोधक सामग्री के द्वारा परिपूर्ण बनावें यही प्रार्थना विद्वानों से है।

इसी छोटी सी पुस्तिका से यह भली भाँति ज्ञात हो सकता है कि भारतीय वाङ्मय की प्रत्येक शाखा में प्रत्येक शताब्दी में जैनाचार्यों ने जो योगदान किया है वह नगण्य नहीं है। इस साहित्य को भी भारतीय साहित्य के इतिहास में उचित स्थान मिले और उसकी साम्प्रदायिक साहित्य के नाम पर उपेक्षा न की जाय तब ही भारतीय साहित्य अपने पूर्ण रूप में ज्ञात हो सकेगा अन्यथा वह विकल ही रहेगा।

निवेदक
दलसुख मालवणिया
मंत्री

२६-१०-५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादक की ओर से

इस छोटी सी पुस्तिका में मैंने यथाशक्य जांच कर जैन ग्रन्थकारों का शताब्दी समय दिया है। पर मेरा निर्णय आखिरी है ऐसा मैं नहीं समझता। विद्वानों को इसे जांचना चाहिए और अन्तिम निर्णय पर आने का प्रयत्न करना चाहिऐ।

इसमें श्वेताम्बर और दिगम्बर साहित्य साथ साथ दिया है। दोनों परंपरा की अलग अलग सूची बनाई गई थी और फिर सभी का पौर्वापर्य जांचने का सरल था नहीं अतएव मैंने दिगम्बराचार्यों के नाम प्रायः श्वेताम्बरों के नामों के अन्त में एकसाथ रख दिये हैं। इसका कोई यह अर्थ न करें की तत्तत् शताब्दी में वे सभी श्वेताम्बरों के बाद ही हुए हैं।

इस संकलन में मैंने संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश ग्रन्थों को ही स्थान दिया है। सिर्फ श्री आनंदघन जी इसके अपवाद हैं। मेरा यह दावा तो नहीं है कि इसमें सभी ग्रन्थों का और ग्रन्थकारों का समावेश हो गया है। विषयक्रम भी ग्रन्थनाम से दिया गया है अतएव संभव है कि ग्रन्थ का विषय कुछ और हो, और उसे लिखा गया हो किसी अन्य विषय का। सभी ग्रन्थ देखना संभव नहीं था अतएव ऐसा भ्रम होना स्वाभाविक है। ग्रन्थ के नाम के बाद कहीं कहीं श्लोक शब्द लिखकर जो अंक दिये हैं वह ग्रन्थ परिमाण को सूचित करते हैं। और जहाँ ग्रन्थ नाम के बाद सिर्फ अंक दिये हैं उनसे उस ग्रन्थ का रचनाकाल विक्रम संवत् में सूचित होता है।

इसको तैयार करने में श्री मो० द० देसाई के 'जैनसाहित्यनो संक्षिप्त इतिहास' का, श्री नाथुराम जी प्रेमी के 'जैनसाहित्य और इतिहास' का विशेष रूपसे उपयोग किया है अतएव मैं उनका आभार मानता हूँ।

बनारस
२५-११-४६

फतेहचन्द बेलानी

८४ आगम (श्वे० संमत)

१–११ **ग्यारह अंग**—आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग, व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशांग, अन्तकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिक, प्रश्नव्याकरण, विपाक।

१२–२३ **बारह उपांग**—औपपातिक, राजप्रश्नीय, जीवाजीवाभिगम, प्रज्ञापना, सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, कल्पिका, कल्पावतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा।

२४–२७ **चार मूलसूत्र**—आवश्यक सूत्र, दशवैकालिक, उत्तराध्ययनानि, पिंडनिर्युक्ति (अथवा ओघनिर्युक्ति)

२८–२९ **दो चूलिका सूत्र**—नन्दीसूत्र, अनुयोगद्वार।

३०–३५ **छ छेद सूत्र**—निशीथ, महानिशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कंध, पंचकल्प (विच्छिन्न)।

३६–४५ **दश प्रकीर्णक**—चतुःशरण, आतुरप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, तन्दुलवैचारिक, चन्द्रवेध्यक, देवेन्द्रस्तव, गणिविद्या, महाप्रत्याख्यान, वीरस्तव, संस्तारक*।

४६ कल्पसूत्र (पर्युषण कल्प, जिनचरित, स्थविरावलि, सामाचारी)

४७ यतिजीतकल्प (सोमप्रभसूरि) } जीत कल्प

४८ श्राद्धजीतकल्प (धर्मघोषसूरि) }

४९ पाक्षिक सूत्र (आवश्यक सूत्र का अंग)

५० क्षमापना सूत्र (आवश्यक सूत्र का अंग)

५१ वंदित्तु (")

५२ ऋषिभाषित

५३–७२ **बीस अन्य पयन्ना**—अजीवकल्प, गच्छाचार, मरणसमाधि, सिद्धप्राभृत, तीर्थोद्गार, आराधनापताका, द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, ज्योतिषकरण्डक, अंगविद्या, तिथिप्रकीर्णक, पिण्डविशुद्धि, सारावलि, पर्यन्ताराधना, जीवविभक्ति, कवच प्रकरण, योनिप्राभृत, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, वृद्धचतुःशरण, जम्बूपयन्ना।

*किसी के मत से 'वीरस्तव' और 'देवेन्द्रस्तव' दोनों का समावेश एक में है और 'संस्तारक' के स्थान में "मरण समाधि" और "गच्छाचपयन्नार" हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७३-८३ ग्यारह निर्युक्ति—(भद्रबाहुकृत)
आवश्यक निर्युक्ति, दशवैकालिक निर्युक्ति, उत्तराध्ययन नि०, आचारांग नि०, सूत्रकृतांग नि०, सूर्यप्रज्ञप्ति नि०, बृहत्कल्प नि०, व्यवहार नि०, दशाश्रुतस्कंध नि० ऋषिभाषित नि०, (अनुपलब्ध), संसक्त नि०।*

८४ विशेष आवश्यक भाष्य†।

विक्रमपूर्व शताब्दी चौथी

शय्यंभवसूरी(वीर०सं०७५-९८)	आगम	दशवैकालिक सूत्र,

विक्रम पूर्व तीसरी

भद्रबाहु स्वामी (वीर० सं० १७०)	आगम	छेद सूत्र–दशाश्रुत, व्यवहार बृहत्कल्प, निशीथ‡

विक्रम पूर्व दूसरी

श्यामाचार्य (वीर० सं० ३३४-७६)	आगम	पन्नापना सूत्र

विक्रम संवत् दूसरी

आर्य रक्षित	आगम	अनुयोगद्वारसूत्र
पादलिप्त सूरि	कथा	तरंगवती (प्राकृत)
	ज्योतिष	ज्योतिषकरंडकटीका,
	प्रकरण	निर्वाण कलिका,
गुणाढ्य	कथा	बृहत् कथा

विक्रम दूसरी तीसरी

गुणधर	आगमिक	कसाय पाहुड
पुष्पदंत-भूतबलि	आगमिक	षट्खंडागम

*'पिण्डनिर्युक्ति' को मूलसूत्रों में गिना गया है।

†विच्छिन्न दृष्टिवाद का समावेश कर लेने से ८५ संख्या होती है। गणना का प्रकार अन्य भी देखा जाता है।

‡पंचकल्प चूर्णि के मत से चार सूत्रों के कर्ता और आवश्यक निर्युक्ति के मत से प्रथम तीन सूत्रों के कर्ता

कुंदकुंदाचार्य	आगमिक	प्रवचनसार, समयसार, नियमसार, पंचास्तिकाय, दशभक्ति बोधपाहुड, सुत्तपाहुड, भावपाहुड, षट्खंडागम की परिकर्म टीका
विमल	कथा	पउमचरिय

विक्रम तीसरी

शिवशर्म सूरि	कर्मशास्त्र	कम्मपयडी, शतक कर्म ग्रन्थ
उमास्वाति(मि)	आगमिक	तत्त्वार्थ सूत्र भाष्य,
	भूगोल	जम्बूद्वीप समास, क्षेत्र विचार (?)
	आचार	प्रशमरति, श्रावक प्रज्ञप्ति (?) पूजा प्रकरण (?)

विक्रम चौथी-पांचवी

सिद्धसेन दिवाकर	दार्शनिक	सन्मति तर्क (प्रा०), न्यायावतार, द्वात्रिंशत् द्वात्रिंशिका (२२ मिलती हैं)

विक्रम पाँचवीं-छठवीं

भद्रबाहु	आगमिक	एकादशनिर्युक्ति–आवश्यक नि०, दशवैकालिक नि०, उत्तराध्ययन नि०, आचारांग नि०, सूत्रकृतांग नि०, सूर्यप्रज्ञप्ति नि०, दशाश्रुतस्कन्ध, व्यवहार सूत्र नि०, पिण्डनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, बृहत्कल्प नि०, ऋषिभाषित नि०।
वट्टकेर	आगमिक	मूलाचार
शिवार्य (शिवनंदि)यापनीय	आगमिक	आराधना* (२१७० गाथा)
सर्वनंदि	आगमिक	लोक विभाग (प्रा०, ५१४)
यति वृषभाचार्य	"	तिलोय पन्नत्ति (५३५)

* आराधना आश्रित साहित्य—
(१) अपराजित सूरि (विजयाचार्य) कृत विजयोदया टीका सबसे प्राचीन और प्रथम,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवनंदि (पूज्यपाद-जिनेंद्र बुद्धि)	आगमिक	सर्वार्थसिद्धि, (तत्त्वार्थ टीका)
	व्याकरण	जैनेंद्र*, शब्दावतार न्यास (पाणिनि पर अनुपलब्ध)
	योग	समाधितंत्र
	वैद्यक	वैद्यकशास्त्र
	मंत्र	मंत्र यंत्र शास्त्र
	प्रकीर्णक	अर्हत्प्रतिष्ठा लक्षण (अनु०), सारसंग्रह(अनु०), जैनाभिषेक (अनु०), शान्त्यष्टक (अनु०), दशभक्ति इष्टोपदेश

छठवीं

देवर्धिगणि क्षमाश्रमण (देववाचक) (आगमों को पुस्तकारूढ किया)	आगम	नन्दीसूत्र
मल्लवादी	दार्शनिक	नयचक्र (द्वारशार), सन्मति-तर्क टीका (अनु०),
चन्द्रर्षि महत्तर	कर्मशास्त्र	पंचसंग्रह सटीक

(२) अमितगति संस्कृत आराधना,
(३) पं. आशाधर–मूलाराधना दर्पण
(४) प्रभाचंद्र–आराधना पंजिका, आराधना कथा कोश.
(५) पं. शिवलाल जी–भावार्थ दीपिका (१८२८), एक प्राकृत टीका (दोनों अनुपलब्ध)
(६) श्रीचंद–टिप्पण
(७) जयनंदि–टिप्पण
(८) देवसेन–कृत आराधनासार,
* जैनेन्द्र व्याकरण (अनेक शेष) पर टीकाएं

असल सूत्र पाठ ३००० सूत्र

आचार्य अभयनंदिकृत महावृत्ति श्लोक-१२००० नौवी-बारहवीं शताब्दी के बीच। श्रुत-कीर्तिकृत पंचवस्तु प्रकिया ३३००० श्लोक।
प्रभाचंदकृत शब्दांभोजभास्कर न्यास १६००० श्लो. पर प्राप्य१२०००श्लोक। महाचंद्रकृत लघु-जैनेन्द्र (बीसवीं शताब्दी)

संघदास क्षमाश्रमण	कथा	वसुदेव हिंडि
धर्मसेन गणि	आगमिक	पंचकल्प भाष्य (संघदास तथा धर्मसेन दोनों ने मिलकर)

विक्रम सातवीं

जिनभद्र क्षमाश्रमण	आगमिक	विशेषावश्यक भाष्य सटीक (६६६), जीतकल्पसूत्र, बृहत्संग्रहणी बृहत्क्षेत्रसमास, विशेषणवती,
कोट्टाचार्य	,,	विशेषावश्यक टीका
धर्मदास गणि (?)	औपदेशिक	उपदेशमाला (प्राकृत)
मानतुंग सूरि (?)	स्तोत्र	भक्ताभर स्तोत्र
सिंहगणि (सिंहसूर)	दार्शनिक	नयचक्र की टीका
जिनदास महत्तर (चूर्णिकार)	आगमिक	नंदीसूत्र चूर्णि (६३५ में) निशीथसूत्र चूर्णि
समन्तभद्र	आचार	रत्नकरंडश्रावकाचार,*
	दार्शनिक	आप्तमीमांसा, युक्त्यनुशासन,
	स्तोत्र	स्वयंभूस्तोत्र,

विक्रम आठवीं

कोट्याचार्य	आगमिक	विशेषावश्यकभाष्यटीका
हरिभद्रसूरि	आगमिक	अनुयोगद्वारवृत्ति, नन्दी लघु-वृत्ति, प्रज्ञापनासूत्र व्याख्या, आवश्यकलघुटीका, आवश्यक बृहत्टीका, ओघनिर्युक्तिवृत्ति,

पीछले सूत्र पाठ पर ३७००

गुणनंदिकृत प्रक्रिया–(शब्दार्णवप्रक्रिया–यही पीछला सूत्र पाठ माना जाता है। सोमदेव सूरि-कृत शब्दार्णव चन्द्रिका (गुणनंदिके शब्दार्णव पर यही टीका है) चारुकीर्तिकृत शब्दार्णव प्रक्रिया (जैनेन्द्रप्रक्रिया)
जैनेन्द्र भाष्य (अनुपलब्ध)

* प्रो० हीरालालजी ने अन्य कर्तृक सिद्ध किया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिटीका, जंबूद्वीप संग्रहणी, जीवाभिगमलघुवृत्ति, तत्त्वार्थसत्रलघुवृत्ति, पंचनियंठी, दशवैकालिक लघुवृत्ति और वृहद्वृत्ति, नन्द्यध्ययन टीका, पिंडनिर्युक्तिवृत्ति, प्रज्ञापनाप्रदेश व्याख्या,
दार्शनिक	अनेकांतजयपताका (सटीक) अनेकान्तवादप्रवेश, न्यायप्रवेश (दिङ्नाग) टीका, षड्दर्शन समुच्चय, शास्त्रवार्तासमुच्चय (व्याख्यायुक्त), अनेकान्त प्रघट्ट* तत्त्वतरंगिणी, त्रिभंगी-सार, न्यायावतारवृत्ति,* पंचलिंगी, द्विजवदनचपेटा, परलोकसिद्धि, वेदबाह्यतानिराकरण, षड्दर्शनी, सर्वज्ञसिद्धि, स्याद्वादकुचोद्य-परिहार,* धर्मसंग्रहणी, लोक-तत्त्व निर्णय,
योग	योगदृष्टिसमुच्चय, योगबिंदु, योगशतक, योगविंशति, षोडशक।
चरित्र-कथा	समराइच्चकहा, मुनिपतिचरित्र, यशोधरचरित्र, वीरांगद कथा, कथा कोश, नेमिनाथ चरिउ, धूर्ताख्यान,
भूगोल	लोकविंदु क्षेत्रसमास वृत्ति,
प्रकरण	अष्टकप्रकरण, उपदेशप्रकरण, धर्मबिंदुप्रकरण, पंचाशक, पंच-वस्तु-(सटीका), पंचसूत्र-टीका,

* अनुपलब्ध

	श्रावक प्रज्ञप्ति, अर्हत्-श्रीचूडामणि, उपदेशपद, कर्मस्तववृत्ति, कुलकानि, क्षमा-वल्लीबीजम्, चैत्यवंदनभाष्य चैत्यवंदन वृत्ति, ज्ञानपंचमी विवरण, दर्शनशुद्धिप्रकरण, दर्शनसप्ततिका, देवेन्द्रनरेन्द्र प्रकरण, धर्मलाभ सिद्धि, धर्म-सार, ध्यानशतकवृत्ति, नाना-चित्रप्रकरण, यतिदिनकृत्य, लघुक्षेत्रसमास, लघुसंग्रहणी, आत्मानुशासन, वीरस्तव, व्यवहार कल्प, श्रावक प्रज्ञप्ति-वृत्ति, श्रावकधर्मतंत्र, संकित-पंचासी, संग्रहणीवृत्ति, पंचासित्तरि, संवोधसित्तरि, संवो-धप्रकरण, संसारदावानल स्तुति, दिनशुद्धि, प्रतिष्ठाकल्प, बृहन्मि-थ्यात्वमथनम्, ललितविस्तरा,
चरित्र	पद्मचरित–पद्मपुराण
आगमिक	आराधना की विजयोदया टीका दशवैकालिक पर विजयोदया टीका
पुराण	हरिवंश-पद्मपुराण
	पउमचरिउ (अपभ्रंश), रिट्ठनेमिचरिउ–(हरिवंशपुराण)(") पंचमी चरिउ–(नागकुमार चरित्र) (") } तीनों पिता-पुत्र ने मिलकर बनाये

हरिषण	
अपराजितसूरि (यापनीय)	
चतुर्मुख	
स्वयंभू	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिभुवन-स्वयंभू (स्वयंभू के पुत्र)	व्याकरण	स्वयंभू व्याकरण,
	स्तोत्र	स्वयंभू छंद
	दार्शनिक	अष्टशती, लघीयस्त्रय, प्रमाण संग्रह, न्यायविनिश्चय सिद्धिविनिश्चय, तत्त्वार्थ की राजवार्तिक टीका

विक्रम नवमी

उद्योतन सूरि (दाक्षिण्यांक सूरि)	कथा	कुवलय माला (प्राकृत)
आचार्य जिनसेन	पुराण	हरिवंश पुराण
कवि परमेष्ठी		वागर्थ संग्रह
वीरसेन	आगमिक	धवला टीका
		जलधवलाटीका*
जिनसेन (वीरसेन के शिष्य)	आगमिक	जय धवला के ४० हजार श्लोक
	काव्य	पार्श्वाभ्युदय काव्य (८३५)
	इतिहास	आदिपुराण (त्रिषष्ठि चरित्र)†
शाकटायन (पाल्यकीर्ति (यापनीय)	दार्शनिक	स्त्रीमुक्ति प्रकरण, केवलिभुक्ति प्रकरण,
	व्याकरण	शब्दानुशासन‡–अमोघवृत्ति
महासेन	चरित्र	सुलोचना कथा

* इस टीका में ६०००० श्लोक हैं उसमें बीस हजार श्लोक वीरसेन ने लिखे, बाकी के चालीस हजार श्लोक जिनसेन ने लिखे ।

† इसमें २०३८० श्लोक जिनसेन ने लिखें, शेष तत्शिष्य गुणभद्र ने लिखा, अर्थात् दोनों ने मिलकर आदिपुराण और उत्तरपुराण पूरा किया ।

‡ **शब्दानुशासन पर टीकाएं**

स्वयंकृत—अमोघवृत्ति (स्वापेज्ञ)
प्रभाचन्द्रकृत—शाकटायन न्यास
यक्षवर्मा कृत—चिन्तामणि लघीयसी टीका
अजीतसेन कृत—मणि प्रकाशिका
अभयचंद्र कृत—प्रक्रिया संग्रह
भावसेन त्रैविद्य कृत—शाकटायन टीका
दयापाल कृत—रूप सिद्धि

प्रभंजन	चरित्र	यशोधर चरित्र
धनंजय	कोश	धनञ्जय नाम माला (अनेकार्थ नाममालायुक्त) (धनंजय निघण्टु नाम माला)
	काव्य	द्विसंधान काव्य× (राघव-पाण्डवीय)
	स्तोत्र	विषापहर स्तोत्र
विद्यानंद (राजमल्ल सत्य वाक्य के समकालीन)	दार्शनिक	आप्तपरीक्षा, प्रमाण परीक्षा, पत्र परीक्षा, सत्यशासनपरीक्षा, अष्टसहस्त्री, श्लोकवार्तिक (तत्त्वार्थसूत्र की टीका) विद्यानंदमहोदय (अनु०) युक्त्यनुशासन टीका, श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र

विक्रम दशवीं शताब्दी

जयसिंह सूरि	उपदेश	धर्मोपदेशमाला वृत्ति
शीलाचार्य (तत्त्वादित्य)	आगमिक	आचारांगटीका
		सूत्रकृतांगटीका
		जीवसमासवृत्ति
शिलांका देव (विमलमति)	चरित्र	चउपन्नमहापुरुसचरियं (१०००० श्लोक),
सिद्धर्षि (दुर्ग स्वामी के शिष्य)	दार्शनिक	न्यायावतार(सिद्धसेन) टीका
	कथा	उपमितिभवप्रपंचा कथा
		चंद्रकेवलीचरित्र
	उपदेश	उपदेशमाला(धर्मदास कृत)-विवरण
विजयसिंह सूरि	कथा	भुवन सुंदरी–८९११ गाथा

× **द्विसंधान पर टीकाएं**

नेमिचंद्र कृत—पदकौमुदी टीका
कवि देवर कृत—राघव-पांडवीय प्रकाशिका
पं बदरीनाथ कृत—संक्षिप्त टीका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महश्वर सूरि	कथा	पंचमीमहात्म्यकथा
	काव्य	संयममंजरी (अपभ्रंश काव्य)
शोभन	स्तुति	शोभन स्तुति
गुणभद्र (जिनसेन के शिष्य)	पुराण	उत्तरपुराण(आदि पुराणका शेष)
	उपदेश	आत्मानुशासन
	चरित्र	जिनदत्त चरित्र
हरिषेण	कथा	आराधना कथाकोश १२५०० श्लोक
कवि पम्प	पुराण	आदिपुराण चम्पू
		विक्रमार्जुन विजय
कवि पोन्न	पुराण	शान्तिपुराण
देवसेन	आगमिक	दर्शनसार, आराधनासार, तत्त्व-सार,
	दार्शनिक	लघुनयचक्र, बृहन्नयचक्र(सटीक), आलाप पद्धति टीका
	प्रकीर्णक	भावसंग्रह
धनपाल (धक्कड वंशीय)	कथा	भवियसत्त कहा (पंचमीकहा)
मणिक्यनंदि	दार्शनिक	परीक्षामुख
अनन्तवीर्य		सिद्धिविनिश्चय(अकलंक)की टीका

विक्रम ग्यारहवीं शताब्दी

जम्बूसूरि	चरित्र	मणिपति चरित्र (१००५)
	स्तुति	जिनशतक.
साम्बमुनि		जिनशतक की टीका
अभयदेवसूरि (तर्कपंचानन)	दार्शनिक	सन्मति (सिद्धसेन) की तत्त्वबोध. विधायिनी टीका (वादमहार्णव) २५००० श्लोक.
धनेश्वरसूरि (अभयदेव के शिष्य)	कथा	सुरसुंदरी कथा (?)
	स्तोत्र	शत्रुंजय माहात्म्य.

पुष्पदंत महाकवि	चरित्र	तिसट्ठिमहापुरुषगुणालंकारु (अपभ्रंश),
		णायकुमार चरिउ (नागकुमार-चरित्र)
		जसहरचरिउ
	पुराण	महापुराण (उत्तरपुराण)
	कोश	कोशग्रन्थ.
	स्तोत्र	शिवमहिम्नस्तोत्र.
आचार्य महासेन (जयसेन के शिष्य गुणाकरके शिष्य)	चरित्र	प्रद्युम्न चरित्र
श्री पद्मनंदि	भूगोल	जंबूदीवपन्नत्ति
नेमिचन्द्र (अभयनंदि के शिष्य)	कर्मशास्त्र	पंचसंग्रह (गोम्मटसार, गोम्मट-संग्रह, गोम्मट संग्रहसूत्र) लब्धि-सार (गोम्मटसार का परिशिष्ट
	भूगोल	त्रिलोकसार
चामुण्डराय (गोम्मटराय)	कर्मशास्त्र	गोम्मटसार की पीरमत्तंडी टीका (कनडी)
अजितसेन के शिष्य	आगमिक	चारित्रसार (तत्त्वार्थ विषयक)
	पुराण	चामुंडपुराण (त्रिषष्ठिलक्षण पुराण)
वीरनंदि (अभयनंदि के शिष्य)	चरित्र	चंद्रप्रभचरित्रमहाकाव्य
इन्द्रनंदि (,,)	चरित्र	श्रुतावतार (श्रुतपंचमी कथा)
कनकनंदि	दार्शनिक	त्रिभंगी
माधवचंद्र त्रैविद्य (नेमिचंद्र के शिष्य)	भूगोल	त्रिलोकसार की टीका
	कर्मशास्त्र	क्षपणसार
श्रीचंद्र	पुराण	महापुराण(पुष्पदंत) का * टिप्पण, पुराणसार.
	चरित	पद्मचरित(रविषेण) का टिप्पण

* एक भाग आदि पुराण, और दूसरा भाग उत्तर पुराण है। 'आदि पुराण' का टिप्पण अनुपलब्ध है। उत्तर पुराण का टिप्पण १२७०० श्लोक है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभाचन्द्र	आगमिक	रत्नकरंडटीका, द्रव्यसंग्रह-पञ्जिका, प्रवचनसरोजभास्कर, आराधनाकथाकोश, अष्टपाहुड-पञ्जिका, समयसारटीका, पञ्चास्तिकाय टीका, मूलाचार टीका,
	कथा	आराधना टीका,
	दार्शनिक	प्रमेयकमलमार्तण्ड, न्यायकुमुद-चन्द्र, सर्वार्थसिद्धिटिप्पण (तत्त्वार्थटीका का विवरण), स्वयंभूस्तोत्रपञ्जिका
	व्याकरण	शब्दाम्भोजभास्कर न्यास (जैनेंद्र व्याकरण का भाष्य) क्रिया-कलाप टीका.
	योग	समाधितंत्र टीका,
	उपदेश	आत्मानुशासनतिलक, देवागमपञ्जिका (?)
वादिराज सूरि	दार्शनिक	न्यायविनिश्चय(अकलंक)टीका
	कथा	पार्श्वनाथचरित्र यशोधर चरित्र,
	स्तोत्र	एकीभाव स्तोत्र,अध्यात्माष्टक,
	भूगोल	त्रैलोक्य दीपीका,
मल्लिषेण	पुराण	महापुराण (त्रिषष्टिचरित्र)
	काव्य	नागकुमार महाकाव्य
	कल्प	भैरव-पद्मावती कल्प, सरस्वती मंत्र कल्प, ज्वालिनी कल्प,
वसुनंदि	आगमिक	उपासकाचार वृत्ति, (?) मूला चार वृत्ति
	दार्शनिक	देवागम (समंतभद्र) पर टीका
	स्तुति	जिनशतक (समंतभद्र) पर टीका प्रतिष्ठासार संग्रह वृत्ति (?)

हरिचन्द्र कवि	काव्य	धर्मशर्माभ्युदय महाकाव्य
सोमदेव	आगमिक	षण्णवति प्रकरण (अनुपलब्ध)
	दार्शनिक	न्यायविनिश्चयसटीक (?) युक्तिचिंतामणि (अनु०), त्रिवर्ग महेंद्रमातलि संजल्प (अनु०), स्याद्वादोपनिषत्
	चम्पू-चरित्र	यशस्तिलक चम्पू पार्श्वनाथ चरित्र
	राजनीति	नीतिवाक्यामृत
अनन्तकीर्ति	दार्शनिक	लघुसर्वज्ञसिद्धि, बृहत्सर्वज्ञसिद्धि, जीवसिद्धि, प्रमाणनिर्णय,
अमितगति (माथुर संघ के आचार्य, माधवसेन के शिष्य	आगमिक	उपासकाध्ययन (अमितगति श्रावकाचार), पंचसंग्रह संस्कृत आराधना (प्राकृत से संस्कृत), सामायिक पाठ (योग सार-प्राभृत), जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (अनु०), चंद्र प्रज्ञप्ति (अनु०), सार्धद्वयद्वीप प्रज्ञप्ति (अनु०), व्याख्या प्रज्ञप्ति (अनु०)
	प्रकीर्णक	भावना द्वात्रिंशिका, धर्म परीक्षा (१०७०), सुभाषितरत्नसंदोह, धर्म परीक्षा (१०४०) .
हरिषेण		
श्रीपति भट्ट (केशवदेव के पौत्र और पुष्पदन्त के भतीजे)	ज्योतिष्	सिद्धान्तशेखर, ज्योतिष रत्न माला, दैवज्ञ वल्लभ, जातक, पद्धत्ति, गणिततिलक, बीज-गणित, श्रीपति निबंध, श्रीपति समुच्चय श्रीकोटिदकरण, ध्रुव-मानस करण
वर्धमान सूरि (१०८८ स्वर्ग)	औपदेशिक	उपदेश पद (हरिभद्र) की टीका उपदेश माला बृहत् टीका
	कथानक	उपमितिभवप्रपंचानामसमुच्चय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शान्ति सूरि वादिवेताल (शान्त्याचार्य स्वर्ग १०९६)	आगमिक	उत्तराध्ययन की पाइअ टीका
जिनचंद्रगणि (कुलचंद्रगणि देवगुप्ताचार्य–तीन नामहैं) कवक सूरि के शिष्य		नवपद लघुवृत्ति, नवपद प्रकरण,
वीराचार्य		आराधना पताका
जिनेश्वर सूरि (वर्धमान सूरि के शिष्य, खरतर गच्छ के स्थापक)	दार्शनिक	प्रमालक्ष्म सटीक, पंचलिंगी-प्रकरण
	कथा-चरित्र	निर्वाण लीलावतीकथा वीर चरित्र
	प्रकरण	हरिभद्र के अष्टकों पर टीका, षट्स्थानक प्रकरण
धनेश्वर सूरि	स्तोत्र	शत्रुंजय माहात्मय,
	कथा	सुंर सुंदरी कथा (?)
बुद्धिसागर सूरि	व्याकरण	पंचग्रन्थी व्याकरण (गद्यपद्यात्मक ७००० श्लोक-संस्कृत-प्राकृत)
श्वेताम्बर सूरि (खड़गाचार्य)	काव्य	खड्ग काव्य
सूराचार्य		द्विसंधान काव्य, नेमि चरित्र
	पुराण	महाकाव्य (१०९०)
महा कवि धवल		हरिवंश पुराण (अपभ्रंश १८०० श्लोक
मरेश्वर सूरि	कथा	संयम मंजरी (अपभ्रंश)
श्रीचंद्रमुनि	"	महावीरोत्साह (") कथाकोश (अनु०)
सागरदत्त	चरित्र-पुराण	जंबू चरिउ (अप०) पार्श्व पुराण (अपभ्रंश)
नयनंदि	चरित्र-पुराण	सुदर्शन चरिउ (अपभ्रंश)

बारहवीं शताब्दी

अभयदेवसूरि (नवांगीटीकाकार, स्वर्ग ११३५ कपड़वंजमें)	आगमिक	ज्ञाताधर्मकथा टीका, (११२० विजयादशमी), स्थानांग टीका (११२०), समवायांग टीका (११२०), भगवती टीका (११२८), उपासकदशा टीका अन्तकृद्दशा टीका, अनुत्तरोपपातिक टीका, प्रश्नव्याकरण टीका, विपाक टीका, औपपातिक टीका, प्रज्ञापना टीका, षट्स्थानक भाष्य, पंचाशक वृत्ति, आराधना कुलक
	स्तुति	जयडतिहुअण स्तोत्र (अपभ्रंश)
जिनचंद्रसूरि		संवेगरंगशाला (११२५)
कविसाधारण (सिद्धसेनसूरि)	कथा	विलासवती कथा (समराइच्च कथा से उद्धृत अपभ्रंश ११२३)
नमिसाधु	आगमिक	चैत्यवंदन (आवश्यक) वृत्ति (११२२) धर्मोपदेशमाला विवरण (प्रा. ११२९)
नेमिचंद्रसूरि (आम्रदेवके शिष्य)	,,	उत्तराध्ययन की सुखबोधा टीका
	कथा-चरित्र	रत्नचूड कथा, महावीरचरियं प्राकृत (११३९) आख्यान मणिकोश.
गुणचंद्रसूरि (सुमति वाचक शिष्य)	,,	महावीरचरित्र (११३९)
शालीभद्रसूरि (थारापद्रगच्छीय)	आगमिक	संग्रहणी वृत्ति
चन्द्रप्रभ महत्तर	चरित्र	विजयचन्द्र चरित्र(११२७–३७)
वर्धमानाचार्य (नवांगी टीकाकार अभयदेव के शिष्य)	,,	मनोरमा चरित्र (११४०) आदिनाथ चरित्र (११६०)
	प्रकीर्णक	धर्मरत्नकरंडवृत्ति (११७२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चन्द्रप्रभसूरि (पौर्णमिक गच्छके स्थापक ११४९)	दार्शनिक	प्रमेयरत्न कोश
	आगमिक	दर्शनशुद्धि,
जिनवल्लभसूरि (नवांगी अभयदेव के पास पुनर्दीक्षा लेकर उनके पट्टधर, पहले जिनेश्वर के शिष्य थे, स्वर्ग ११६७)	आगमिक	सूक्ष्मार्थसिद्धान्तविचार (सार्धशतक) आगमिकवस्तुविचार सार, षडशिति पिण्डविशुद्धि प्रकरण, प्रतिक्रमण सामाचारी, अष्टसप्ततिका
		पौषधविधि प्रकरण, संघपट्टक धर्मशिक्षा, द्वादशकुलक, प्रश्नोत्तरशतक,
	काव्य	शृंगारशतक, स्वप्नाष्टक विचार चित्रकाव्य,
	स्तोत्र	अजितशांतिस्तव, भावारिवार स्तोत्र, जिनकल्याणक स्तोत्र वीरस्तव, आदि करीब सौ स्तोत्र, प्रशस्तियां
शान्ति सूरि (पूर्णतल्लगच्छीय)	दार्शनिक	न्यायावतार वार्तिक और वृ
	काव्य-टीका	तिलक मंजरी टिप्पण, वृन्दावन घटखर्पर-मेघाभ्युदय-शिवभद्र-चन्द्रदूत काव्यों की वृत्ति
जिनदत्तसूरि (दादा) जिनवल्लभ के शिष्य	चरित्र	गणधरसार्धशतक, गणधर सप्तति
	आगमिक	कालस्वरूप कुलक, विंशिका, चर्चा संदेहदोलावलि, सुगुरु पारतंत्र्य
	स्तोत्र	स्वार्थाधिष्ठायिस्तोत्र, विघ्नवि नाशिस्तोत्र, अवस्था कुलक चैत्यवन्दन कुलक,
	उपदेश	उपदेश रसायन,
रामदेवगणि (जिनवल्लभ के शिष्य)	कर्मशास्त्र	षडशिति टिप्पनक (११७३ सत्तरी टिप्पनक (११७३)
जिनभद्रसूरि (जिनवल्लभ के शिष्य)	कोश	अपवर्गनाममाला कोश (पंचव परिहार नाममाला)

पद्मानंद (गृहस्थ)		वैराग्यशतक
कवि श्रीपाल	प्रबंध	वैरोचन पराजय-महाप्रबंध,
	स्तोत्र	सहस्त्रलिंग सरोवर प्रशस्ति, दुर्लभ सरोवर प्रशस्ति, रुद्रमाल प्रशस्ति, आनंदपुरवप्रप्रशस्ति (१२०९)
हेमचंद्रसूरि (बृहद्गच्छीय)	काव्य	नाभेय-नेमि द्विसंधान काव्य.
देवभद्रसूरि (नवांगीटीकाकार अभयदेवके प्रशिष्य)	उपदेश	आराहणासत्थ, संवेगरंगशाला
	कथा-चरित्र	वीरचरियं, कहारयणकोसो (११५८), पार्श्वनाथ चरित्र (११६५)
वीरगणि (समुद्रघोषसूरि)	आगमिक	पिंडनिर्युक्ति वृत्ति (११६९)
वर्धमानसूरि (नवांगी टीकाकार अभयदेव के शिष्य)	चरित्र	आदिनाथ चरित्र (११६०)
	प्रकरण	धर्मकरंड सटीक (११७२)
मुनिचन्द्रसूरि (वादीदेवसूरि के गुरु वडगच्छीय)	आगमिक	सूक्ष्मार्थसार्धशतक-चूर्णि (११६८) सूक्ष्मार्थविचारसार चूर्णि(११७०)आवश्यक सप्तति
	कर्मशास्त्र	कर्म्म प्रकृति का टिप्पन,
	दार्शनिक	अनेकान्त जयपताका वृत्ति का टिप्पन (११७६)
	काव्य-टीका	नैषध काव्य पर टीका
	टीका	चिरंतनाचार्य रचित (हरिभद्र सूरि रचित ?) देवेंद्रनरेंद्र प्रकरण पर वृत्ति-(११६८) उपदेशपद (हरिभद्र)का टिप्पन, (११७४) ललितविस्तरा (हरिभद्र) की पंजिका, धर्मविंदु की वृत्ति,
	प्रकरण	अंगुलसप्तति, वनस्पतिसप्तति-का, गाथाकोश, अनुशासनांकुश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		कुलक, उपदेशामृत कुलक, प्राभातिक स्तुति, मोक्षोपदेश पंचाशिका, उपदेश पंचाशिका, रत्नत्रय कुलक, शोकहर उपदेश, सम्यक्त्वोत्पाद विधि, सामान्य-गुणोपदेश कुलक, हितोपदेश कुलक, कालशतक कुलक. मंडल विचार कुलक, द्वादशवर्ग ।
वादी देवसूरि (मुनिचंद्र के शिष्य) जन्म ११४३, दीक्षा ११५२ आचार्य ११७४, स्वर्ग १२२६	दार्शनिक	प्रमाणनयतत्त्वालोक–'स्याद्वाद-रत्नाकर' टीका युक्त (८४००० श्लोक)
	आगमिक	मूलशुद्धि की स्थानक टीका (स्थानकानि)
देवचन्द सूरि (हेमचन्द्राचार्य के गुरु)	चरित्र	शान्तिनाथ चरित्र(प्रा०)११६०
शान्तिसूरि (बृहद्गच्छ)	,,	पृथ्वीचन्द चरित्र
हेमचन्द्र (पूर्णतल्लगच्छ) जन्म ११४५, दीक्षा ११५४ आचार्य ११६६, स्वर्ग १२२९	व्याकरण	सिद्धहेमशब्दानुशासन बृहद् वृत्ति–लघुवृत्ति धातुपारायण, उणादिसूत्रवृत्ति, लिङ्गानुशासन बृहन्न्यास सहित ।
	काव्य	द्व्याश्रय (संस्कृत) ,, (प्राकृत) कुमारपाल चरित ।
	कोष	अभिधानचिन्तामणि सटीक, अनेकार्थ संग्रह सटीक, देशीनाम-माला सटीक, निघंटुशेष
	अलंकार	काव्यानुशासन–अलंकार चूडा-मणि और विवेक सहित ।
	छंद	छन्दोनुशासन सटीक
	दार्शनिक	प्रमाणमीमांसा, अन्ययोगव्यव-च्छेदिका । वादानुशासन(अनु०)

	पुराण	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित परिशिष्ट पर्व सहित
	योग	योगशास्त्र-सटीक
	स्तोत्र	अयोगव्यवच्छेदिका, वीतराग स्तोत्र, महादेव स्तोत्र
	नीति	अर्हन्नीति (?)
देवसूरि(वीरचंद्रसूरि के शिष्य)	आगमिक	जीवानुशासन सटीक (११६२)
धर्मघोषसूरि (चन्द्रप्रभ सूरि-पौर्णमिक गच्छस्थापक के शिष्य)	व्याकरण	शब्दसिद्धि
	स्तोत्र	ऋषि मंडल स्तोत्र
यशोदेवसूरि (उपकेशगच्छीय)	आगमिक	नवपद (देवगुप्त कृत) प्रकरण वृत्ति की बृहद्वृत्ति (११६५) नवतत्त्व प्रकरण की वृत्ति ११७४
	चरित्र	चंद्रप्रभ चरित्र प्रा० ११७८
विनयचंद्र	कथा	कथानक कोश ११६६
धनेश्वर सूरि	आगमिक	सूक्ष्मार्थ विचार सार की वृत्ति (१४००० श्लोक०; ११७१)
श्रीचंद्रसूरि (पार्श्वदेव सूरि) धनेश्वर के शिष्य	आगमिक	निशीथ चूर्णि (जिनदास) की विशोद्देशक व्याख्या ११७३ श्रावकप्रतिक्रमण सूत्र की वृत्ति १२२२ नंदी टीका दुर्गपद व्याख्या, सुख-बोधा सामाचारी, जीतकल्प बृहत् चूर्णि की व्याख्या १२२७ निरयावलि की वृत्ति १२२८ चैत्यवंदनसूत्रवृत्ति, सर्व सिद्धान्त विषमपद व्याख्या,
	दार्शनिक	न्यायप्रवेशक (दिङ्नाग) की हारिभद्रीय वृत्ति की पञ्जिका ११६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	चरित्र	मुनिसुव्रत चरित्र (?)
	स्तोत्र-कल्प	प्रतिष्ठा कल्प, उपसर्गहर स्तोत्र (भद्रबाहु) की टीका (?)
यशोदेव सूरि (वीरगणि के शिष्य श्रीचंद्रसूरि के शिष्य)	आगमिक	पंचाशक (हरिभद्र) की चूर्णि, ११७२
		ईर्यापथिकी चूर्णि, चैत्यवंदन चूर्णि बंदनक चूर्णि, पिंडविशुद्धि (जिनवल्लभ) लघुवृत्ति ११७६, पाक्षिक सूत्र की सुखविबोधा टीका ११८०, पच्चक्खाणसरूव ११८२
हेमचंद्र सूरि–*मलधारी	आगमिक	विशेषावश्यकभाष्य की बृहत् वृत्ति (२८०० श्लो०; ११७५)
		आवश्यक टिप्पनक (आवश्यक प्रदेश व्याख्या) ५००० श्लोक, अनुयोगद्वार वृत्ति, जीवसमास वृत्ति (७००० श्लो० ११६४) नंदीसूत्र टिप्पनक
	कर्मशास्त्र	शतकनामा कर्म ग्रंथ पर वृत्ति ४००० श्लो०
	उपदेश	उपदेशमाला सटीक १४००० श्लोक
		भवभावनासटीक (१३००० श्लो०; ११७०)
अमरचंद्र सूरि (नागेन्द्र गच्छीय, आनंद सूरि के गुरुभाई)		सिद्धान्तार्णव (?)
हरिभद्र सूरि (आनंद सूरि के पट्टधर)		तत्त्वप्रबोध

* विशेषावश्यक भाष्य बृहदवृत्ति में उनके सात सहायकों के नाम

१ अभय कुमार गणि
२ धनदेव गणि
३ जिनभद्र गणि
४ लक्ष्मण गणि
५ विबुध चंद्र गणि
६ आनंद श्री महत्तरा साध्वी
७ वीरमति गणिनि साध्वी

हरिभद्र सूरि (जिनदेव उपाध्याय के शिष्य)	कर्मशास्त्र	बंधस्वामित्व-षडशिति-कर्म ग्रन्थ की वृत्ति ११७२
	चरित्र	मुनिपतिचरित्र प्रा०, श्रेयांस चरित्र,
	उपदेश	प्रशमरति (उमास्वाति) की वृत्ति ११८५
	भूगोल	क्षेत्रसमास की वृत्ति
जिनेश्वर सूरि	चरित्र	मल्लिनाथ चरित्र प्रा० ११७५
विजय सिंह आचार्य चंद्र गच्छीय	आगमिक	प्रतिक्रमण सूत्र की चूर्णि ४५०० श्लो०; ११८३
धर्मघोषसूरि (राजगच्छीय शीलभद्र सूरि के शिष्य)		धर्म कल्पद्रुम ११८६
यशोभद्रसूरि (धर्मघोष के शिष्य)		गद्य गोदावरी ग्रंथ
महेन्द्र सूरि	कथा	नर्मदा सुंदरी कथा ११८७
आम्रदेव सूरि (वडगच्छीय जिनचंद्र सूरि के शिष्य	कथा	आख्यानमणिकोश (नेमिचंद्रसूरि) की टीका ११९०
नग्न सूरि		धम्मविहि
सिद्धसूरि (उपकेशगच्छीय देवगुप्त सूरि के शिष्य)	भूगोल	क्षेत्र समास पर वृत्ति ११९२
नयमंगल आचार्य	अलंकार	कवि शिक्षा
विजयसिंह सूरि (मलधारी हेमचंद्र के शिष्य)	उपदेश	धर्मोपदेशमाला विवरण १४४७१ श्लो.; ११९१
श्रीचंद्रसूरि "	आगमिक	संग्रहणीरत्न प्रा.
	चरित्र	मुनिसुव्रत चरित्र १०९९४ गाथा; ११९३
विबुधचंद्रसूरि "		क्षेत्रसमास
लक्ष्मणगणि "		सुपासनाहचरियं
देवभद्रसूरि (मलधारी श्रीचंद्र सूरि के शिष्य)		संग्रहणी (श्रीचंद्र) की वृत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	दार्शनिक	न्यायावतार का टिप्पण
वर्धमानसूरि (गोविन्दसूरि के शिष्य)	व्याकरण	गणरत्नमहोदधि सटीक
	चरित्र	सिद्धराज वर्णन
सिंहसूरि	भूगोल	लोकविभाग (संस्कृत)
आचार्य अमृतचंद्र	आगमिक	तत्त्वार्थसार, पंचास्तिकाय टीका
	उपदेश	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय
वादीभसिंह (पुष्पसेन के शिष्य) (ओडयदेव)		गद्यचूडामणि, क्षत्रचूडामणि,
वाग्भट	काव्य	नेमिनिर्वाण महाकाव्य, *
	अलंकार	वाग्भटालंकार ‡
जयकीर्ति	छन्द	छंदोनुशासन
देवचंद्रसूरि (वष्टिदेव)		सुलसाख्यान, (अपभ्रंश)
	स्तोत्र	मुनिचंद्रस्तव (अपभ्रंश)
जिनदत्तसूरि		चर्चरी, उपदेशरशायन रास, कालस्वरूपकुलक(तीनों अपभंश)
धाहिल	चरित्र	पउमसिरि चरिय, (अप.)

तेरहवीं शताब्दी

मलयगिरि	व्याकरण	मलय गिरि व्याकरण (मुष्टि व्याकरण) ६००० श्लोक

* इसपर भट्टारक ज्ञानभूषण कृत पंजिका है।
‡ वाग्भटालंकार पर टीकाएँ।
१ जिनवर्धमान सूरिकृत
२ सिंहदेवगणि कृत
३ क्षेमहंसगणि कृत
४ राजहंस उपाध्यायकृत
५ वादिराज कृत-कविचन्द्रिका टीका,
६ गणेश वैष्णव कृत,

	आगमिक	आवश्यक बृहद्वृत्ति, ओघ-निर्युक्ति वृत्ति, चंद्रप्रज्ञप्ति वृत्ति, जीवाभिगम वृत्ति,ज्योतिष्करंडक टीका, नंदी सूत्र टीका, पिंड निर्युक्ति वृत्ति, प्रज्ञापना वृत्ति बृहत्कल्पपीठिकावृत्ति, भगवती द्वितीय शतक वृत्ति, राजप्रश्नीय वृत्ति, विशेषावश्यक वृत्ति (?) व्यवहार सूत्र वृत्ति, क्षेत्र समास (जिनभद्र) वृत्ति, कर्मप्रकृति टीका, धर्मसार टीका, पंचसंग्रह (चंद्रर्षिमहत्तर)टीका, षड़शिति वृत्ति, सप्ततिका (कर्मग्रन्थ) टीका।
	दार्शनिक	धर्मसंग्रहणी टीका,
लक्ष्मण गणि मलधारी हेमचंद्र के शिष्य	चरित्र	सुपासनाह चरियं(१०००० श्लो. ११९९)
जिनभद्र	औपदेशिक	उपदेशमाला १२०४
चन्द्रसेन (चांद्रकुलीय प्रद्युम्न सूरि के शिष्य)	दार्शनिक	उत्पादादि सिद्धि सटीक
नेमिचंद्र		अनन्तनाथ चरित्र (१२१३)
कनकचंद्र		पृथ्वीचंद्र टिप्पण (१२२६) शीलभावना वृत्ति (१२१४)
श्रीचंद्रसूरि (चन्द्र गच्छीय देवेन्द्र सूरि के शिष्य)		सनत्कुमार चरित्र (८००० श्लो. १२१४)
श्री चंद्र सूरि (मलधारी हेमचंद्र के शिष्य)	आगमिक	आवश्यक प्रदेश व्याख्या पर टिप्पन १२२२
मुनिरत्नसूरि (पौर्णमिक गच्छीय समुद्रघोष सूरि के शिष्य)	चरित्र	अममस्वामि चरित्र (१२२४) अंबड चरित्र, मुनिसुव्रत चरित्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमप्रभ सूरि (वडगच्छीय)		सुमतिनाथ चरित्र (प्रा०) कुमारपाल प्रतिबोध (१२४१)
	काव्य	शतार्थ काव्य (सं) सूक्ति-मुक्तावलि, सिंदुरप्रकर-सोमशतक १२३३-३५
विजयसिंह सूरि (चांद्र-गच्छीय)	भूगोल	जम्बूद्वीप समास (उमास्वाति) टीका-विनेयजनहिता (२२१४) क्षेत्रसमास (जिनभद्र) वृत्ति(?)
हरिभद्र सूरि वडगच्छीय		चौबीस तीर्थंकर चरित्र, (चंद्र-प्रभ, मल्लि, नेमि उपलब्ध १२१६; श्लोक. २४०००
पद्मप्रभ सूरि	ज्योतिष	भुवनदीपक ग्रहभावप्रकाश (१२२१)
परमाणंद सूरि (शांति सूरि शिष्य अभयदेव सूरि के शिष्य)		कर्मविपाक (गर्गर्षि) टीका (प्रथमकर्म ग्रन्थ पर)
रामचंद्र सूरि (हेमचंद्र के शिष्य) एक सौ प्रबन्ध के कर्ता	आगमिक	द्रव्यालंकार स्वोपज्ञ वृत्ति युक्त
	दार्शनिक	व्यतिरेक द्वात्रिंशिका
	व्याकरण	सिद्धहेम न्यास(५३००० श्लो०)
	नाटक	सत्यहरिश्चन्द्र नाटक, निर्भय-भीमव्यायोग, राघवाभ्युदय, यदुविलास रघुविलास, नल-विलास, मल्लिकामकरन्द रोहिणीमृगांक, वनमाला, सुधाकलशकोश,कोमुदीमित्राणंद नाटचदर्पण सटोक
	स्तोत्र	कुमार विहारशतक, युगादिदेव द्वात्रिंशिका, प्रासाद द्वात्रिंशिका मुनिसुव्रत द्वात्रिंशिका, आदिदेव स्तव, नाभिस्तव, सोलह स्तवन,

महेन्द्र सूरि(हेमचन्द्र के शिष्य)	कोष	अनेकार्थ संग्रह कोश पर अनेकार्थ कैरवाकरकौमुदी टीका १२४१
वर्धमान गणि (")	नाटक	कुमार विहार शतक पर व्याख्या चंद्रलेखा विजय नाटक
बालचन्द्र (")	"	मानमुद्रा भंजननाटक, (अनुपलब्ध) स्नातस्या स्तुति
रामभद्र (देवसूरि संतानीय जय प्रभ सूरि के शिष्य)	"	प्रबुद्धरौहिणेय नाटक
यशःपाल मंत्री	"	मोहपराजय नाटक
आचार्य मल्लवादी	दार्शनिक	धर्मोत्तर टिप्पनक
नरपति (धारा के आम्रदेव का पुत्र)	शकुनग्रंथ	नरपतिजयचर्या
प्रद्युम्नसूरि (वादिदेव सूरि के शि० महेन्द्र सूरि के शिष्य)	दार्शनिक	वादस्थल (जिनपति का खंडन)
जिनपति सूरि	"	प्रबोध्यवादस्थल (ऊपर के ग्रन्थ का खंडन)
	प्रकरण	तीर्थमाला, संघ पट्टक (जिन वल्लभ) बृहद्वृत्ति पंचलिंगि (जिनेश्वर) विवरण
रत्नप्रभ सूरि (वादीदेवसूरि के शिष्य)	दार्शनिक	स्याद्वादरत्नाकरावतारिका
	चरित्र	नेमिनाथ चरित्र प्रा० १२२३ उपदेशमाला (धर्मदास) दोघट्टी वृत्ति
महेश्वर सूरि (")		पाक्षिक सप्तति पर सुखप्रबोधिनी वृत्ति
सोमप्रभ सूरि		कुमारपाल प्रतिबोध (१२४१)
हेमप्रभ सूरि (पौर्णमिक यशोघोष सूरि के शिष्य)	प्रकीर्णक	प्रश्नोत्तर रत्नमाला(विमलसूरि) पर वृत्ति (१२४३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमाणद सूरि (वादी देव सूरि के प्रशिष्य)	दार्शनिक	खंडन मंडन टिप्पन
देवभद्र (अभयदेव की परंपरा में)	दार्शनिक	प्रमाण प्रकाश
	चरित्र	श्रेयांस चरित्र
सि[illegible]न सूरि (देवभद्र के शिष्य)	आगमिक	प्रवचनसारोद्धार (नेमिचंद्र) पर तत्त्वज्ञान विकाशिनी टीका (१२४८)
		सामाचारी
	चरित्र	पद्मप्रभ चरित्र
	स्तोत्र	स्तुतियां
आसड	काव्य	मेघदूत टीका
	स्तोत्र	जिन स्तोत्र स्तुतियाँ
	औपदेशिक	उपदेश कंदली
		विवेक मंजरी
यशोभद्र (धर्मघोष के प्रशिष्य)		गद्य गोदावरी
नेमिचंद्र	आगमिक	प्रवचनसारोद्धार की विषम-पदव्यख्याटीका
		शतककर्म ग्रन्थ पर टिप्पनक
		कर्मस्तव टिप्पनक
पृथ्वीचंद्र		कल्प टिप्पनक
उदयसिंह (श्रीप्रभ के शिष्य)		धर्मविधि (श्रीप्रभ) टीका (१२५३)
देवसूरि	चरित्र	पद्मप्रभ चरित्र प्रा० (१२५)
नेमिचन्द्र श्रेष्ठी	औपदेशिक	सट्ठिसय (षष्ठिशतक)
		उपदेश रसायन (जिनदत्त) का विवरण, द्वादशकुलक (जिन-वल्लभ) विवरण (१२९३)
	चर्चा	चर्चरी (जिनदत्त) विवरण
मलयप्रभ (मानतुंगसूरि के शिष्य)	स्वप्न	स्वप्नविचार भाष्य,
		सिद्ध जयंति (मानतुंग) वृत्ति (१२६०)

तिलकाचार्य (स्वर्ग० १३०८)	आगमिक	जीतकल्प वृत्ति १२७४
		सम्यक्त्व प्रकरण–दर्शनशुद्धि टीका (दादागुरु ने प्रारम्भ की हुई पूरी की) १२७७
		आवश्यक निर्युक्ति लघुवृत्ति,
		दशवैकालिक टीका
		श्रावक प्रायश्चित्त समाचारी
		पोषध प्रायश्चित्त समाचारी
		वंदनक प्रत्याख्यान लघुवृत्ति,
		श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र लघुवृत्ति
		पाक्षिकसूत्र–पाक्षिक क्षामणका-वचूरि।
जिनपाल (जिनपतिसूरि के शिष्य)		षट्स्थानक (जिनेश्वर) वृत्ति १२६२
	दार्शनिक	पंचलिंगीविवरण टिप्पन १२९३
	चरित्र	सनत्कुमार चरित्र
धर्मघोष (अंचलगच्छीय)		शतपदी प्रश्नोत्तर पद्धति प्रा० १२६३
वस्तुपाल	काव्य	नारायणानंद काव्य १२७७-८७
जिनदत्तसूरि (वायडगच्छीय)		विवेक विलास
अमरचन्द्र सूरि (जनदत्त के शिष्य)	व्याकरण	स्यादिशब्दसमुच्चय
	काव्य	कविकल्पलता सटीक, कवि-शिक्षावलि, काव्यकल्पलता परिमल सटीक, पद्मानंद काव्य (जिनेन्द्र चरित्र)
		कलाकलाप
		बालभारत
	छंद	छन्दोरत्नावलि
	अलंकार	अलंकार प्रबोध
	सुभाषित	सूक्तावलि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बालचन्द्र	काव्य	वसंतविलास काव्य
	औपदेशिक	उपदेश कंदली पर टीका १२७८, विवेक मंजरी पर टीका ,,
	नाटक	करुणावज्रायुध नाटक
देवेन्द्र सूरि	चरित्र	चन्द्रप्रभचरित्र १२६४
गुणवल्लभ	व्याकरण	व्याकरण चतुष्कावचूरि(१२७२)
अजितदेव	योग	योगविद्या
हरिभद्र	चरित्र	मुनिपति चरित्र १२७३
पूर्णभद्र	कथा-चरित्र	दश उपासक कथा १२७५
विजयपाल	नाटक	द्रौपदी स्वयंवर नाटक
वर्धमान सूरि	चरित्र	वासुपूज्य चरित्र १२२९
जयसिंह सूरि	काव्य	वस्तुपाल तेजपाल प्रशस्तिकाव्य
	नाटक	हम्मीरमदमर्दन नाटक(१२७६-८६)
उदयप्रभ सूरि	काव्य	सुकृतकल्लोलिनी (प्रशस्ति काव्य)
	चरित्र	धर्माभ्युदय महाकाव्य (संघाधिपतिचरित्र) नेमिनाथ चरित्र
	ज्योतिष	आरम्भसिद्धि
	कर्मशास्त्र	षडशिति और कर्मस्तव पर टिप्पन
	उपदेश	उपदेशमाला (धर्मदास) कर्णिका टीका (१२९९)
माणिक्यचंद्र सूरि	चरित्र	पार्श्वनाथ चरित्र १२७६
		शांतिनाथ चरित्र
	काव्य	काव्य प्रकाश संकेत (काव्य प्रकाशकी टीका (१२७६)
देवप्रभ सूरि	चरित्र	पांडव चरित्र, मृगावती चरित्र, काकुत्स्थ केलि

नरचंद्र सूरि (देवप्रभ के शि०)	व्याकरण	प्राकृतदीपिका प्रबोध
	कथा	कथारत्न सागर
		अनर्घराघव (मुरारिकृत) टिप्पन
	दार्शनिक	न्यायकंदली (श्रीधर) टीका
	ज्योतिष	ज्योतिःसार (नारचंद्र ज्योतिः-सार)
	स्तोत्र	चतुर्विंशति जिन स्तुति
नरेन्द्रप्रभ	अलंकार	अलंकारमहोदधि
अभयदेव सूरि (द्वितीय)	काव्य	जयंत विजय काव्य (१२७८)
श्रीप्रभ सूरि	व्याकरण	कारक समुच्चय (हेमचंद्र) वृत्ति (१२८०)
लक्ष्मीधर	कथा	तिलकमंजरी कथासार
पूर्णभद्र गणि	चरित्र	अतिमुक्तक चरित्र १२८२
	,,	धन्य शालीभद्र चरित्र १२८५
	,,	कृतपुण्य चरित्र १३०५
बप्पभट्टि	अलंकार	काव्यशिक्षा
विनयचंद (बप्पभट्टि के शिष्य)	चरित्र	मल्लिनाथ चरित्र
		पार्श्वनाथ चरित्रादि २० प्रबंध
		कविशिक्षा (?) १२८५
सर्वदेव	स्वप्न	स्वप्नसप्ततिका वृत्ति
महेन्द्र सूरि (धर्मघोष के पट्ट शि०)		शतपदी (धर्मघोष) विस्तार १२९४
	स्तोत्र	तीर्थमाला स्तोत्र सटीक प्रा० जीरावल्ली पार्श्व स्तोत्र
भुवनतुंग सूरि	आगमिक	चतुःशरणावचूरि
पद्मप्रभ सूरि	चरित्र	मुनिसुव्रत चरित्र, कुंथुचरित्र, पार्श्वस्तव भुवनदीपक १२९४
सुमतिगणि (जिनपति सूरि के शिष्य)		गणधरसार्धशती (जिनदत्त) बृहद्वृत्ति १२९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदयसिंह सूरि	आगमिक	पिण्डविशुद्धि (जिनवल्लभ) दीपिका सूत्रसहित
गुणाकर सूरि	आयुर्वेद	योगरत्नमाला (? नागार्जुन) वृत्ति १२९९
मलधारी पद्मप्रभ	आगमिक	नियमसार तात्पर्य टीका
समन्तभद्र (लघु)	दार्शनिक	अष्टसहस्त्रीविषमपदतात्पर्य टीका
शिवकोटि(समन्तभद्र के शिष्य)	आगमिक	तत्त्वार्थ टीका
पं० आशाधर	आयुर्वेद	अष्टांग हृदय सटीक, अष्टांग हृदय द्योतिनी टीका
	आगमिक	धर्मामृत शास्त्र
		मूलाराधना टीका, सागार धर्मामृत टीका १२८५
		अनगारधर्मामृत टीका १३००
		आराधना सार टीका
	दार्शनिक	प्रमेयरत्नाकर
	कोश	अमरकोश पर टीका,
	व्याकरण	क्रिया कलाप
	अलंकार	काव्यालंकार पर टीका
	चरित्र	त्रिषष्टिस्मृति शास्त्र १२९२
		भरतेश्वराभ्युदय
		राजीमती विप्रलम्भ
	कल्पादि	जिनयज्ञकल्प, ज्ञान दीपिका, इष्टोपदेश,
		भूपाल चतुर्विंशतिका टीका
		सहस्त्रनाम स्तव सटीक, नित्य महोद्योत, रत्नत्रय विधान,
		भव्य कुमुद चंन्द्रिका टीका
	योग	अध्यात्म रहस्य,
शुभचन्द्र (मेघचंद त्रैविद्य के शिष्य	योग	ज्ञानार्णव (योग प्रदीप)१२०७-८४ के बीच

धनपाल	कथा	तिलकमंजरी कथासार १२६१
माधनन्दि	आगमिक	शास्त्रसार समुच्चय
	कल्प	प्रतिष्ठा कल्प

१३ वीं सदी अपभ्रंश

हेमचन्द्राचार्य		अपभ्रंशव्याकरण
अमरकीर्ति	कर्मशास्त्र	छक्कम्मोवएस (१२४७)
योगचन्द्र (योगीन्द्रदेव)		योगसार, परमात्मप्रकाश
माइल्ल धवल		दर्शनशास्त्र (देवसेन) दोहा में किया ।
हरिभद्रसूरि		नेमिनाहचरिय ८०३२ गाथा
वरदत्त		वज्रस्वामी चरित्र
रत्नप्रभ		अंतरंगसिद्धि, कुछ कुलक
जयदेवगणि		भावना संधि
रत्नप्रभाचार्य		उपदेशमाला दोघट्टी के कुछ अंश
सोमप्रभ सूरि		कुमारपाल प्रतिबोध के कुछ अंश

चौदहवीं शताब्दी

देवेन्द्रसूरि (जगत् चन्द्र सूरि के शिष्य) स्वर्ग० १३२७	कर्मशास्त्र	पांच नव्य कर्मग्रन्थ सटीक (कर्मविपाक कर्मस्तव, बंधस्वामित्व, षडशिति, शतक)
	आगमिक	तीन भाष्य
		श्रावक दिनकृत्य सवृत्ति,
		धर्मरत्नटीका
		सिद्धपंचाशिका (?)
	चरित्र	सुदर्शनाचरित्र,
	प्रकीर्णक	दानादिकुलक, अनेक स्तवन-प्रकरण आदि
सर्वानन्द	चरित्र	चन्द्रप्रभचरित्र (१३०२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमानन्दसूरि(नवागा०अभयदेव के शिष्य)		हितोपदेशमाला वृत्ति (१३०४)
यशोदेव	उपदेश	धर्मोपदेश प्रकरण प्रा०
अजितप्रभसूरि	चरित्र	शान्तिनाथ चरित्र १३०७
	उपदेश	भावनासार
जिनेश्वरसूरि	विधिविधान	श्रावकधर्मविधि (१३१३) बृहद्वृत्तियुक्त (१३२७)
पूर्णकलश (जिनेश्वर के शिष्य)	व्याकरण	द्व्याश्रय(हेमचन्द्र)वृत्ति १३०७ (प्राकृत)
लक्ष्मीतिलक "	चरित्र	प्रत्येकबुद्ध चरित्र (सं०)१३११
चन्द्रतिलक उ "	चरित्र	अभयकुमारचरित्र९०३६श्लोक, १३१२
धर्मतिलक "		उल्लासिक स्मरण टीका
		अजितशान्ति (जिनवल्लभ) टीका १३३२
अभय तिलक	दार्शनिक	पंचप्रस्थन्यायतर्क व्याख्या (न्यायलंकार टिप्पन) तर्क-न्याय सूत्र (अक्षपाद) टीका
		न्यायभाष्य (वात्स्यायन) टीका
		वार्तिक (भारद्वाज) टीका
		तात्पर्य टीका (वाचस्पति) की टीका
		न्यायतात्पर्य परिशुद्धि (उदयन) टीका
		न्यायालंकार वृत्ति(श्रीकंठ)टीका
	व्याकरण	सं० द्व्याश्रय (हेमचंद्र) वृत्ति
सुरप्रभ	काव्य	ब्रह्मकल्प
विद्यानन्द	व्याकरण	विद्यानन्द व्याकरण
जयमंगलसूरि	अलंकार	कविशिक्षा (१३२९-३०)

प्रबोधचन्द्र गणि	दार्शनिक	संदेहदोलावलि पर बृहद्वृत्ति (१३२१)
मुनिदेवसूरि	चरित्र	शान्तिनाथ चरित्र,
	उपदेश	धर्मोपदेशमाला पर वृत्ति
	कल्प	वर्धमानविद्याकल्प
	गणित	लीलावती वृत्तियुक्त
		गणित तिलक वृत्ति
	मंत्रतंत्र	मन्त्रराज रहस्य १३२२
		भुवनदीपक (पद्मप्रभसूरि) वृत्ति १३२६
नरचन्द्र (कासद्रहगच्छ)	ज्योतिष	प्रश्नशतक, जन्मसमुद्र सटीक
देवानन्द	व्याकरण	शब्दानुशासन
प्रद्युम्नसूरि (चांद्रगच्छीय)	आगमिक	प्रव्रज्याविधान-मूलशुद्धि प्रकरण (१३३८)
	कथा	समरादित्य संक्षेप १३२४
विजयचन्द्र सूरि	कल्प	दीपालिका कल्प (कल्प-निर्युक्तियुक्त)
रत्नप्रभसूरि		कुवलयमाला(दाक्षिण्यसिंहसूरि) प्राकृत से संस्कृत
प्रबोधमूर्ति	व्याकरण	दुर्गपदबोधटीका–कातंत्र व्याकरण पर-१३२८
सोमचन्द्र	छन्दःशास्त्र	वृत्तरत्नाकर पर टीका
धर्मघोषसूरि (देवेन्द्र के शिष्य)	आगमिक	संघाचारभाष्य-चैत्यवंदन भाष्य विवरण
		कालसप्तति सावचूरि-कालस्वरू विचार, श्राद्धजीतकल्प (प्राकृत)
	स्तोत्र	दुषमकाल संघस्तोत्र,चतुर्विंशति जिनस्तुति
सोमप्रभ (धर्मघोष के शिष्य)	आगमिक	यतिजीतकल्प
	स्तोत्र-स्तुति	२८ यमक स्तुति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षेमकीर्ति	आगमिक	वृहत्कल्पसूत्र (भद्रबाहु) विवृति १३३२
मानतुंगाचार्य	चरित्र	श्रेयांस चरित्र
धर्मकुमार	,,	शालिभद्र चरित्र (१३३८)
विवेकसागर	आगमिक	सम्यक्त्वालंकार,
	कथा-चरित्र	पुण्यसार कथानक
प्रभाचन्द्रसूरि	चरित्र	प्रभावक चरित्र १३३८
भालचन्द्र	उपदेश	विषयनिग्रहकुलक वृति
माणिक्यसरि	शकुन	शकुनसारोद्धार १३३८
उदयप्रभसूरि (विजयसेन के शिष्य)	काव्य	धर्माभ्युदय
मल्लिषेण (उदयप्रभ के शिष्य)	दार्शनिक	स्याद्वाद मंजरी (१३४९)
जिनप्रभसूरि	आगमिक	विधिप्रपा सामाचारी, १३६३.
		संदेहविषौषधि (कल्पसूत्रटीका)
		साधुप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति १३६४
		आवश्यकसूत्रावचूरि
	व्याकरण	कातंत्र व्याकरण पर विभ्रम टीका १३५२
	व्याकरण-चरित्र	द्वयाश्रयकाव्य (श्रेणिक चरित्र-१३५६)
	कल्पस्तोत्रादि	विविधतीर्थकल्प सातसौ स्तवन, गौतमस्तोत्र, २४ जिनस्तुति, अजिनराज स्तवन प्रा० द्विअक्षरस्तवन (नेमिनाथ), पंचपरमेष्ठिस्तव आदि
		अजितशान्तिस्तवनवृत्ति, उपसर्गहरस्तोत्र वृत्ति, धर्माधर्मप्रकरण, भयहर (मानतुंग) स्तोत्रवृत्ति, चतुर्विध भावना कुलक,
	चर्चा	तपोमत कुट्टन,

		सूरिमन्त्रप्रदेशविवरण, महावीर स्तवनवृत्ति १३८०
जिनप्रभ सूरि	अपभ्रंश साहित्य	मदनरेखा सन्धि, मल्लि चरित्र, नेमिनाथ रास, ज्ञान प्रकाश, वयरस्वामि चरित्र, षट्पंचाशक दिक्कुमारिका अभिषेक, मुनिसुव्रत जन्माभिषेक, धर्माधर्म-विचार कुलक
		श्रावकविधि प्रकरण, चैत्य परिपाटी
		स्थूलभद्र फाग, युगादिजिन चरित्र कुलक
जिनप्रभ सूरि के शिष्य (??)	कथा-चरित	नर्मदासुंदरी सन्धि १३२८ गौतम स्वामि चरित्र
संघतिलक सूरि	आगमिक	सम्यक्त्व सप्ततिका
महेश्वर सूरि	कथा	कालकाचार्य कथा १३३५
मेरुतुंग	प्रबंध-चरित्र	प्रबंध चिन्तामणि १३६१ कामदेव चरित्र १४०१ सम्भवनाथ चरित्र १४१३
विजयसिंह सूरि	व्याकरण	हैमव्याकरण बृहद्वृत्ति पर दीपिका १३६८
फेरू (ज्योतिषाचार्य)	ज्योतिष विज्ञान	ज्योतिष सार सटीक द्रव्यपरीक्षा सटीक, रत्न परीक्षा सटीक, वास्तुसार (१३७२),
कमलप्रभ	चरित्र	पुंडरीक चरित्र
सोमतिलक (सोमप्रभ के शिष्य)	आगमिक	नव्य क्षेत्र समास १३७३ विचार सूत्र
		सप्ततिशतस्थानक, १३८७
	स्तोत्रस्तुति	सोमप्रभकृत २८ स्तुति पर वृत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुधाकलश (मलधारा राजशेखर के शिष्य)	संगीत	संगीतोपनिषत् १३८०, संगीत सार १४०६
	कोश	एकाक्षरनाममाला
जिनकुशल सूरि	आगमिक	चैत्यवंदन (जिनदत्त) कुलकवृत्ति
सोमतिलक (विद्यातिलक)	दार्शनिक	षड्दर्शन टीका १३९२
	प्रबंध	कुमारपाल प्रबंध
	कल्प-स्तोत्र	वीरकल्प (१३८९), लघुस्तव टीका १३९७
	उपदेश	शीलोपदेशमाला (जयतिलक) पर शीलतरंगिणी टीका
रत्नदेव गणि	सुभाषित	वज्जालय पर टीका १३९३
श्री तिलक		गौतमपृच्छा
सर्वानन्द सूरि	चरित्र	जगडु चरित्र
भुवनतुंग सूरि	आगमिक	आतुर प्रत्याख्यान वृत्ति, चतुः-शरण वृत्ति
	स्तोत्र	ऋषिमंडल पर वृत्ति
हस्तिमल्ल कवि (गोविन्द भट्ट के पुत्र)	नाटक	विक्रान्त कौरव, सुभद्राहरण, मैथली कल्याण अंजनापवनंजय,
	चरित्र	आदिपुराण* (पुरु-चरित) श्रीपुराण*
	कल्प	प्रतिष्ठाकल्प
वागभट	काव्य शास्त्र	काव्यानुशासन स्वोपज्ञवृत्ति युक्त
	छन्द	वागभट छन्दोनुशासन
माघनन्दि सं० १३१७	आगमिक	माघनन्दि श्रावकाचार
	दार्शनिक	शास्त्रवार्ता समुच्चय पर टीका

*दोनों कनडी भाषा में

पंद्रहवीं शताब्दी

राजशेखर	दार्शनिक	स्याद्वादकलिका(स्याद्वाद दीपिका), रत्नाकरावतारिका पंजिका, ड्दर्शन समुच्चय, न्यायकंदली पंजिका,
	प्रबंध-चरित्र	प्रबंधकोश १४०५ कौतुक कथा,
ज्ञानचंद	दार्शनिक	रत्नाकरावतारिका-टिप्पन,
गुणसमृद्धि महत्तरा (साध्वी)	चरित्र	अंजनासुंदरी चरित्र (प्राकृत) १४०६
मुनिभद्र	,,	शान्तिनाथ चरित्र,
सोमकीर्ति	व्याकरण	कातंत्रवृत्ति-पंजिका १४११
भवदेवसूरि	विधिविधान	यतिदिन चर्या-प्रा०
	चरित्र	पार्श्वनाथ चरित्र कालकाचार्य कथा,
जयसिंहसूरि	दार्शनिक	न्यायसार (भासर्वज्ञ) दीपिका
	व्याकरण	एक व्याकरण भी बनाया है,
	चरित्र	कुमारपाल चरित्र
गुणाकर	स्तोत्र	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति १४२६
महेन्द्रप्रभसूरि	यंत्र-तंत्र	यंत्रराज १४२७
मलयेन्द्र (महेन्द्र के शिष्य)		यंत्रराज टीका
रत्नशेखर	आगमिक	गुणस्थान क्रमारोह सटीक१४४७ संबोध सत्तरि
	भूगोल	लघुक्षेत्र समास सविवरण
	कथा	सिरिवाल कहा (प्रा० १४२८)
	छंद	छन्दकोश (")
	स्तोत्र-स्तुति	गुरुगुण षट्त्रिंशत् षट्त्रिंशिका
	यंत्र-तंत्र	सिद्धयंत्रचक्रोद्धार
	प्रकीर्णक	प्रश्नोत्तर रत्नमाला पर वृत्ति
	उपदेश	दानोपदेशमाला सटीक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयशेखर सूरि	आगमिक	कल्पसूत्र सुखाववोध विवरण
	दार्शनिक	न्यायमंजरी
	काव्य	धम्मिल चरित काव्य(१४६२), जैनकुमारसम्भव, नल-दमयंती चम्पू
	प्रकीर्णक	उपदेश चिन्तामणि सावचूरि १४३६
		प्रबोध चिन्तामणि १४६२
		शत्रुंजय बत्रीशी, गिरनार बत्रिशी
		महावीर बत्रिशी,
		आत्मबोधकुलक धर्मसर्वस्व,
		उपदेशमाला अवचूरि, संबोध सप्ततिका,
महेन्द्रसूरि (स्व. १४४४)	स्तोत्र	तीर्थमाला
		विचार सप्ततिका (?)
मेरुतुंग (महेन्द्र सूरि के शिष्य)	आगमिक	सप्ततिभाष्य पर टीका १४४९
		भावकर्म प्रक्रिया, शतकभाष्य,
	दार्शनिक	षड्दर्शन निर्णय
	व्याकरण	कातंत्र व्याकरण वृत्ति १४४४
		धातुपारायण
	काव्य	मेघदूत सटीक
	स्तोत्र	नमोत्थुणं टीका
जयानन्द	चरित्र	स्थूलभद्र चरित्र
ज्ञानसागर (देवसुंदर के शिष्य)	आगमिक	आवश्यक अवचूर्णि १४४०,
		उत्तराध्ययन अवचूर्णि १४४१
		ओघनिर्युक्ति अवचूर्णि १४४१
	स्तुति-स्तोत्र	मुनिसुव्रतस्तव, नवखंडपार्श्वस्तव आदि
कुलमंडन (देवसुन्दर के शिष्य)	आगमिक	प्रज्ञापना सूत्र अवचूरि १४४३,
		प्रतिक्रमण सूत्र अवचूरि,
		कल्पसूत्र अवचूरि
		पाक्षिकसत्तरि, अंगुलसत्तरि
		सिद्धान्तालापकोद्धार
	चरित्र-कथा	जयानंद चरित्र, मित्रचतुष्क कथा
	स्तुति	काव्य स्थिति स्तोत्र अवचूरि,
		स्तोत्ररत्न कोश शांतिकर स्तोत्र,
		सीमंधर स्तुति
	उपदेश	विचारामृतसार, उपदेश रत्नाकर सवृत्ति
साधुरत्न (देवसुन्दर के शिष्य)	आगमिक	यतिजीत कल्प वृत्ति १४५६
		नवतत्त्व अवचूरि
गुणरत्न * (,,)	आगमिक	कल्पान्तर्वाच्य १४५७
		सप्ततिका अवचूर्णि १४५९
		चार पयन्ना पर अवचूरि
		क्षेत्र समास(सोमतिलक)अवचूरि
		नवतत्त्व अवचूरि
		ओघनिर्युक्ति का उद्धार
	कर्मशास्त्र	देवेन्द्रीय कर्म ग्रन्थों पर अवचूरि
	दार्शनिक	षड्दर्शन (हरिभद्र) पर तर्क रहस्य दीपिका टीका १४६६
	व्याकरण	क्रियारत्न समुच्चय १४६६
मुनिसुन्दरसूरि (सोमसुन्दर के शिष्य)	न्यायादि	त्रैविद्यगोष्ठि (न्याय-व्याकरण-काव्य विषयक)
	चरित्र	गुर्वावलि
		अध्यात्मकल्पद्रुम ?
		त्रिदशतरंगिणी (विज्ञप्ति पत्र)
देवानन्द (देवमूर्ति)	आगमिक	क्षेत्र समास सटीक
नयचन्द्रसूरि	काव्य	'वीरांक' हम्मीर महाकाव्य
	नाटक	रम्भा मंजरी नाटिका

* देवसुन्दर के पांचवें शिष्य सोमसुन्दर सूरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयचन्द्र सूरि (सोमसुन्दर के शिष्य)	आगमिक	प्रत्याख्यानस्थान विरमण १५०६
		सम्यक्त्व कौमुदी
		प्रतिक्रमण विधि
भुवनसुन्दरसूरि (,,)	दार्शनिक	परब्रह्मोत्थापन
		लघु महा विद्या विडंबन,
	प्रकीर्णक	व्याख्यान दीपिका
		महाविद्या विवृति टिप्पन
जिनकीर्ति (,,)	चरित्र	धन्यकूमार चरित्र (दानकल्प-द्रुम), श्रीपालगोपाल कथा
		चंपकश्रेष्ठिकथा
	स्तुत-स्तोत्र	नमस्कारस्तववृत्ति, पंचजिन स्तवन
		श्राद्ध गुण संग्रह
रत्नशेखरसूरि (सोमसुन्दर के शिष्य)	आगमिक	षडावश्यक वृत्ति,
		श्राद्धप्रतिक्रमण वृत्ति (अर्थ-दीपिका) १५०६
		आचार प्रदीप ?
	प्रकीर्णक	प्रबोध चन्द्रोदय वृत्ति
माणिक्यसुन्दर (जयशेखर—मेरुतुंगके शिष्य	कथा-चरित्र	चतुःपर्वी चम्पू १४६३
		श्रीधर चरित्र, गुणवर्म चरित्र
		धर्मदत्त कथानक, महाबलमलय सुन्दरी चरित्र
माणिक्य शेखर (,,)	आगमिक	कल्पनिर्युक्ति पर अवचूरि
		आवश्यक निर्युक्ति पर दीपिका
		पिंडनिर्युक्ति पर दीपिका
		ओघनिर्युक्ति दीपिका दशवै कालिक निर्युक्ति दीपिका
		उत्तराध्ययन निर्युक्ति दीपिका,
		आचारांग निर्युक्ति दीपिका
		नवतत्त्व विवरण

नमिसाधु	अलंकार	रुद्रालंकार टिप्पन
		रुद्रालंकार तात्पर्य परिशुद्धि (टीका)
देवमूर्ति	चरित्र	विक्रम चरित्र
गुणसमुद्रसूरि	कथा	जिनदत्त कथा १४७४
	खंडन-मंडन	अंचलमतदलन
हर्षभूषण	आगमिक	श्राद्धविधि विनिश्चय, पर्युषणा विचार
जिनसुन्दर	कल्प	दीपालिका कल्प
चारित्रसुन्दर	काव्य	शीलदूत काव्य, कुमारपाल-चरित्र महाकाव्य
	चरित्र	महीपाल चरित्र
रामचन्द्रसूरि	चरित्र	विक्रम चरित्र १४९०
		पंचदण्डातपत्र (सिंहासन द्वात्रिंशिका (क्षेमंकर) के आधार से)
शुभशील (मुनिसुन्दर के शिष्य)	कथा-चरित्र	विक्रम चरित्र १४९०, भरतेश्वर बाहुबलि वृत्ति
		प्रभावक कथा १५०६
	व्याकरण	उणादि नाम माला
	कल्प	शत्रुंजय कल्प वृत्ति
जिनमण्डन	आगमिक	श्राद्धगुण संग्रह विवरण १४९८
	उपदेश	कुमारपाल प्रबोध १४९२
	चर्चा	धर्म परीक्षा
चरित्र रत्नगणि	उपदेश	दान प्रदीप
जिनहर्ष	कथा-चरित्र	वस्तुपाल चरित्र, रत्नशेखर कथा, आराम शोभा चरित्र
	आगमिक ;	विंशति स्थानक विचारामृत, प्रतिक्रमण विधि
कीर्तिराज उपाध्याय	काव्य	नेमिनाथ महाकाव्य १४१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धीरसुन्दरगणि	आगमिक	आवश्यक निर्युक्ति पर अवचूरि
सोमसुन्दरसूरि	आगमिक	चउसरण पयन्ना-संस्कृत टीका
		आतुर प्रत्याख्यान अवचूरि
		सप्तति पर अवचुरि
	स्तुति-स्तोत्र	अष्टादश स्तव सावचुरि
मंडन मंत्री	व्याकरण	सारस्वत मंडन
	काव्य	काव्य मंडन, कविकल्पद्रुम
	चम्पू	चम्पू मंडन
	कथा	कादम्बरी मंडन, चंद्र विजय
	अलंकार	अलंकार मंडन
		शृंगार मंडन
	संगीत	संगीत मंडन
		उपसर्ग मंडन
धनराज (धनद)		शृंगार धनद १४१०
		नीति धनद ,,
		वैराग्य धनद ,,
		धनद त्रिशति: ,,
ब्रह्मसूरि	नाटक	ज्योति: प्रभाकल्याणक नाटक

सोलहवीं शताब्दी

गुणरत्न	प्रकीर्णक	षष्ठि शतक पर टीका
तपोरत्न	आगमिक	उत्तराध्ययन लघुवृत्ति
सोमधर्मगणि	उपदेश	उपदेश सप्ततिका
सोमदेवगणि	कथा	कथा महोदधि
	स्तुति	सिद्धान्त स्तव (जिनप्रभ) टीका
गुणाकरसूरि	आगमिक	सम्यक्त्व कौमुदी १५०४
	प्रकीर्णक	विद्यासागर
चारित्र वर्धन		सिंदुर प्रकर टीका १५०५
	काव्य	रघुवंश की टीका–शिशुहितैषिणी

उदय धर्म		वाक्य प्रकाश १५०७
सर्वसुंदर सूरि	चरित्र	हंसराज-वत्सराज चरित्र
मेघराज	स्तोत्र	वीतराग स्तोत्र
साधु सोम	चरित्र	महावीर चरित्र (जिनवल्लभ)
		वृत्ति
		पुष्पमाला वृत्ति
		नन्दीश्वर स्तवन वृति
ऋषि वर्धन		जिनेन्द्रातिशय पंचाशिका
धर्मचन्द्र गणि		सिंदुर प्रकर पर टीका
हमेहंस गणि	ज्योतिष	आरम्भ सिद्धि पर टीका
	व्याकरण	न्याय मंजुषा बृहद्वृति १५१६
ज्ञानसागर	चरित्र	विमलनाथ चरित्र
रत्नमंडन गणि	उपदेश	उपदेश तरंगिणी
	चरित्र	प्रबंधराज-(भोजप्रबंध) १५१७
शुभशील गणि	चरित्र	शालीवाहन चरित्र १५४०
	कल्प	शत्रूंजय कल्प १५१८
प्रतिष्ठा सोम	काव्य	सोम सौभाग्य काव्य
राजबल्लभ	आगमिक	षडावश्यक वृति १५३०
	कथा-चरित्र	चित्रसेन पद्मावती कथा
		भोज प्रबन्ध १५३०
सुधानन्द·गणि के शिष्य	दार्शनिक	जल्पमंजरी
सत्यराज	चरित्र	पृथ्वीचन्द्र चरित्र १५३५
भावचन्द्र सूरि	चरित्र	शान्तिनाथ चरित्र
विनय भषण	व्याकरण	स्यादिशब्द समुच्चय की टीका
सिद्धान्त सागर	स्तुति	चतुर्विंशति ।जन स्तुति
सोम चारित्र	काव्य	गुरुगुण रत्नाकर काव्य
साधु विनय	दार्शनिक	वाद विजय प्रकरण १५४५-५१
		हेतुखंडन प्रकरण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्व विजय	चरित्र	दशश्रावक चरित्र
शुभ वर्धन	उपदेश	वर्धमान देशना
	चरित्र	दशश्रावक चरित्र
	स्तोत्र	ऋषिमंडल वृति
जिन माणिक्य	चरित्र	कुर्मापुत्र चरित्र
कमल संयम उपाध्याय	आगमिक	उत्तराध्ययन टीका-सर्वार्थसिद्धि
		उत्तराध्ययन दीपिका
		सिद्धान्तसारोद्धार पर सम्यक्त्वोल्लास टिप्पन
	कर्मशास्त्र	कर्मस्तव विवरण
उदय सागर	आगमिक	उत्तराध्ययन दीपिका
कीर्ति वल्लभगणि	,,	उत्तराध्ययन पर वृत्ति १५५२
इन्द्रसिंह गणि	चरित्र	भुवनभानु चरित्र १५५४,बलिनरेन्द्र कथा
		मन्हजिणाणं पर कल्पवल्लीटीका
लब्धिसागर		श्रीपाल कथा १५५७
तिलक गणि	व्याकरण	प्राकृत शब्द समुच्चय १५६१
सिद्धान्तसार	दार्शनिक	दर्शनरत्नाकर १५७०
अनन्तहंस गणि	चरित्र	दशकृष्टान्त चरित्र १५७१
विनयहंस	आगमिक	दशवैकालिक वृत्ति
		उत्तराध्ययन वृत्ति
सोमदेवसूरि		कुमारपाल प्रबोध १५७३
		सम्यक्त्व कौमुदी १५७३
सौभाग्यनंदि	कथा	मौनएकादशी कथा
विद्यारत्न		कुर्मापुत्र चरित्र १५७५
लावण्य समय	चरित्र	विमल चरित्र १५७८
गजसार		विचारषड्त्रिंशिकासटीक१५७१
जिनहंससूरि	आगमिक	आचारांग दीपिका

सहजसुन्दर		रत्नश्रावक प्रबंध १५८२
हर्षकुल गणि	आगमिक	सूत्रकृतांग दीपिका १५८३
	व्याकरण	वाक्य प्रकाश
	कर्मशास्त्र	बन्धहेतूदय त्रिभंगी
लक्ष्मी कल्लोल	आगमिक	आचारांग अवचूर्णि
		ज्ञातासूत्र लघुवृत्ति (मुग्धावबोधा)
हृदय सौभाग्य	व्याकरण	हेम प्राकृतवृत्ति ढुंढिका पर व्युत्पत्ति दीपिका १५९१
श्रुतसागर १५५० करीब	आगमिक	तत्वार्थवृत्ति श्रुतसागरी टीका
		तत्वत्रय प्रकाशिका, षट्प्राभृत टीका
	व्याकरण	औदार्य चिन्तामणि सटीक
	कथा-चरित्र	यशस्तिलक (सोमदेव) चन्द्रिका, व्रतकथा कोश
	स्तोत्र	जिनसहस्र (आशाधर) टीका
		महाभिषक् (आशाधरका नित्य महोद्योत) टीका
		श्रुतस्कन्ध पूजा
ज्ञान भूषण भट्टारक	आगमिक	सिद्धान्तसार (जिनचन्द्रसूरि) भाष्य
		तत्वज्ञान तरंगिणी १५६०
		पंचास्तिकाय टीका (अनुपलब्ध)
	काव्य	नेमिनिर्वाण काव्य पंजिका (अनु.)
	उपदेश	परमार्थोपदेश (अनु०)
		दशलक्षणोद्यापन, भक्तामरोद्यापन, सरस्वती पूजा (ये तीनों अनु०)
गुणभद्र भट्टारक	स्तोत्र	चित्रबन्ध स्तोत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्रहवीं शताब्दी

उदयधर्मगणि	आगमिक	जीवविचार (शान्ति सूरि) वृत्ति १६१०
	उपदेश	उपदेशमालाकी ५१वीं गाथा पर शास्त्रार्थ वृत्ति १६०१
जिनचन्द्र सूरि	विधि विधान	पोषधविधि पर वृत्ति १६१७
साधुकीर्ति		संघपट्टक पर अवचूरि १६१९
ज्ञानप्रमोद	छन्द:शास्त्र	वाग्भटालंकार परवृत्ति १६२१
हीरकलश	ज्योतिष	जोइस हीर प्रा० १६२१
धर्मसागर उपाध्याय	आगमिक	कल्प किरणावलि १६२८
		जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति पर वृत्ति १६२
	खंडन मंडन	औष्ट्रिकमतोत्सूत्रदीपिका (खरतरगच्छ खंडन) १६१७
		प्रवचन परीक्षा (कुपक्षकौशिकादित्य सवृत्ति) १६२९
	आगमिक	तत्वतरंगिणी वृत्ति, गुरुतत्व प्रदीपिका
		ईर्यापथिका षट्त्रिंशिका, गुर्वावलि सवृत्ति
		पर्युषणशतक सवृत्ति, सर्वज्ञशतक सवृत्ति
		वर्धमान द्वात्रिंशिका
विजयदेव सूरि (ब्रह्ममुनि) पार्श्वचंद्रीय	आगमिक	दशाश्रुतस्कन्ध पर जनहिता टीका
		जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति पर वृत्ति
विजय विमल (वानर ऋषि) (आनंदविमल के शिष्य)	आगमिक	गच्छाचारपयन्ना पर लघु-बृहत् टीका १६३४
		तंदुलवैयालियपयन्ना पर अवचूरि
		भाव प्रकरण सटीक

	स्तोत्र	साधारण जिनस्तव पर अवचूरि
	कर्म शास्त्र	बन्धोदयसत्ता सटीक-सावचूरि १६२३
		बन्धहेदूदय (हर्षकुल) त्रिभंगी पर अवचूरि
	प्रकीर्णक	प्रतिलेखना कुलक
	व्याकरण	जिनेन्द्र अनिट्कारिका पर अवचूरि
नयरंग	चरित्र	परमहंस संबोध चरित १६२४ अर्जुनमालाकर
पद्मराज	स्तोत्र	रुचितदंडक स्तुति पर व्याख्या
चारित्र सिंह	व्याकरण	कातंत्र्य विभ्रम पर अवचूरि १६२१
दयारत्न	दार्शनिक	न्यायरत्नावलि १६२६
अजितदेव	आगमिक	पिंडविशुद्धि पर दीपिका
चन्द्रकीर्ति	व्याकरण	सारस्वत व्याकरण पर सुबोधिका दीपिका
	छन्द-शास्त्र	प्राकृत छन्दकोश (रत्नशेखरकृत) पर संस्कृत टीका १६१३
		सिद्धचक्र (रत्नशेखर) टीका
सकलचन्द्र गणि	उपदेश	ध्यान दीपिका १६२१
		धर्मशिक्षा, श्रुतास्वाद शिक्षाद्वार १६३०
	कल्प	प्रतिष्ठा कल्प १६३०
हेम विजय	चरित्र कथा	पार्श्वनाथ चरित्र, १६३२, कथारत्नाकर १६५७
	प्रकीर्णक	ऋषभशतक, अन्योक्तिमुक्ता-महोदधि
		कीर्तिकल्लोलिनी, सूक्तरत्नावलि
		सद्भाव शतक, चतुर्विंशति स्तुति
		स्तुतित्रिदशतरंगिणी कस्तुरी प्रकर
		विजय स्तुति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	काव्य	विजय प्रशस्ति*(१६ सर्ग पर्यन्त)
वीरभद्र	शृङ्गार	कन्दर्प चूडामणि १६३३
पद्मसागर	दार्शनिक	नयप्रकाशाष्टक सटीक, युक्ति प्रकाश सटीक प्रमाण प्रकाश सटीक
	काव्य	जगद्गुरु काव्य संग्रह १६४६ उत्तराध्ययन कथा संग्रह (प्राकृत से. संस्कृत) १६५७
	कथाचरित्र	तिलक मञ्जरी वृत्ति, यशोधर चरित्र
	प्रकीर्णक	शील प्रकाश, धर्म परीक्षा
रवि सागर	कथाचरित्र	रूपसेन चरित्र, प्रद्युम्न चरित्र मौन एकादशी कथा
पुण्यसागर	आगमिक	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वृत्ति १६४५
	काव्य	प्रश्नोत्तर काव्य (जिनवल्लभ) वृत्ति
पद्मराज		रुचितदंडक स्तुति (भुवनहित) वृत्ति १६४४
जयसोम	विधि विधान	इरियावहिका त्रिंशिका सटीक १६४० पोषध प्रकरण सटीक १६४५
समय सुंदर	आगमिक	कल्पसूत्र पर कल्पलता वृत्ति दशवैकालिक पर शब्दार्थ वृत्ति १६११ जीव विचार-नवतत्त्व दंडक पर वृत्ति १६९८
	कथा	चातुर्मासिक पर्व कथा, कालकाचार्य कथा (गद्य-पद्य)

*शेष पांच सर्ग और सम्पूर्ण टीका उनके गुरुभाई विद्याविजय के शिष्य गुण विजयजी ने की। टीका का नाम विजयदीपिका है १६८८।

	काव्य	रघुवंश पर वृत्ति अष्टलक्षी ('राजानो ददते सौख्यं' ही) अर्थ रत्नावलि वृत्तियुक्त १६४६-७६
	छन्दःशास्त्र	वृत्त रत्नाकर पर वृत्ति १६१४
	प्रकीर्णक	रूपकमालावृत्ति, समाचारी शतक, विशेष शतक, विचार शतक, विसंवाद शतक, विशेष संग्रह, गाथा सहस्री, जयतिहुअण स्तोत्र वृत्ति, संवाद सुन्दर, कल्याण मंदिर वृत्ति दुरियरयसमीर (जिनवल्लभ) स्तोत्र वृत्ति
गुण विनय	काव्य	खंडप्रशस्तिकाव्य पर वृत्ति, रघुवंश टीका १६४६ लघुशान्ति टीका १६५१
	कथा	दमयंती कथा (त्रिविक्रम) वृत्ति
	स्तुति-स्तोत्र	अजित शान्ति (जिनवल्लभकृत) पर मितभाषिणी वृत्ति,
	प्रकीर्णक	वैराग्यशतक पर टीका, संबोध सप्ततिका (जयशेखर) वृत्ति, इन्द्रियपराजयशतक टीका, हीर प्रश्न (प्रश्नोत्तर समुच्चय) संकलित किया।
गुण विजय	खंडन-मंडन	उत्सूत्रोद्घाटन कुलक (धर्मसागर का खंडन)
शान्तिचन्द्र गणि (सकलचंद्र के शिष्य)	आगमिक	जम्बूदीव पन्नत्ति पर प्रमेयरत्न मञ्जुषा
	काव्य	क्षीमसौभाग्याभ्युदय ग्रन्थ १६५०
	स्तुति	अजित शान्ति स्तव, विवरण सूक्तिद्वात्रिंशिका पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रीति विमल	कथा	चम्पक श्रेष्ठि कथा
देवविजय	कथा-चरित्र	जैनरामायण, पांडव चरित्र गद्य १६६०
	प्रकीर्णक	सप्ततिशत स्थानक वृत्ति, धर्मरत्न मञ्जुषा (दानादिकुलक वृत्ति १६६६
विनय कुशल		मण्डल प्रकरण स्वोपज्ञ. १६५२ विचार सप्ततिका वृत्ति १६७५
कनक कुशल	कथा	सौभाग्य पंचमी कथा, सुरप्रिय मुनि कथा, रौहिणेय कथानक,
	स्तुति-स्तोत्र	जिनस्तुति १६४१, कल्याण-मंदिर टीका विशाल लोचन सूत्रवृत्ति,१६५३ साधारण जिनस्तवन पर अव-चूरि, रत्नाकर पच्चीसी टीका
ज्ञानविमल	व्याकरण	शब्दप्रभेद (महेश्वर कृत) व्याकरण पर वृत्ति १६५४
वल्लभ उपाध्याय	कोश	अभिधाननाममाला पर सारोद्धार वृत्ति, शिलोञ्छ कोश (जिनेश्वर कृत) पर टीका
	व्याकरण	लिंगानुशासन (हेम) दुर्गप्रबोध टीका
	काव्य	विजयदेवमाहात्म्य काव्य सटीक
	स्तोत्र	अरनाथ स्तुति सवृत्ति
हर्ष कीर्ति	व्याकरण	सारस्वत दीपिका, सेट् अनिट् कारिका विवरण, धातुपाठ तरंगिणी, शारदीय नाममाला
	छन्दःशास्त्र	श्रुतबोध वृत्ति
	योग	योग चिन्तामणि

	वैद्यक	वैद्यक सारोद्धार
	स्तुति-स्तोत्र	बृहत्शान्ति पर टीका १६५५ कल्याण मन्दिर टीका सिंदूर प्रकर टीका
रविसागर		मौन एकादशी माहात्म्य १६५७
नर्गाषिगणि	आगमिक	स्थानांग दीपिका कल्पान्तर्वाच्य (प्राकृत-१६५७)
	स्तोत्र	जिनसहस्त्र नाम १६५८ जिनस० की टीका
ज्ञानतिलक		गौतम कुलक पर वृत्ति १६६०
बुद्धि विजय	कथा	चित्रसेन-पद्मावती कथा १६६०
हंस प्रमोद		सारंगसार वृत्ति
आनन्द विजय		त्रिभंगी सूत्र(हर्षकुल) वृत्ति
मेरु विजय		वीरजिनस्तुति सावचूरिक
शुभ विजय	आगमिक	कल्पसूत्र पर वृत्ति १६७१
	दार्शनिक	तर्कभाषा वार्तिक १६६३ स्याद्वाद भाषा १६६७
	कोश	हैमी नाम माला
	काव्य	काव्यकल्पलतावृत्तिमकरंद १६६५
	प्रकीर्णक	सेन प्रश्न (संकलन) १६५७ प्रश्नोत्तर रत्नाकर १६७१
जयविजय		शोभनस्तुति पर वृत्ति १६७१
भानुचन्द्र उपाध्याय	व्याकरण	सारस्वत व्याकरण टीका
	कथा	कादम्बरी पूर्वभाग टीका रत्नपाल कथानक विवेक विलास पर टीका
	शकुन	वसन्तराज पर टीका
	स्तोत्र	सूर्य सहस्रनाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धि चन्द्र उपाध्याय (भानुचन्द्र के शिष्य)	व्याकरण	धातु मञ्जरी, अनेकार्थनाममाला पर वृत्ति
	कथा चरित्र	कादम्बरी उत्तर भाग पर टीका
		वासवदत्ता पर वृत्ति
		भानुचन्द्र चरित्र
	स्तुति-स्तोत्र	भक्तामर टीका, शोभन स्तुति पर टीका
		वृद्धप्रस्तावोक्ति रत्नाकर
मानसागर		शतार्थी पर वृत्ति
नय विजय गणि (विजय सेन सूरि के शिष्य)		पुद्गलभंगविवृति प्रकरण
हर्ष नन्दन गणि		मध्याह्न व्याख्यान, आदिनाथ व्याख्यान, ऋषिमण्डल स्तोत्र पर वृत्ति
रत्नचंद्र (शांन्ति चन्द्र के शिष्य)	चरित्र-काव्य	प्रद्युम्न चरित्र महाकाव्य १६७१
		नैषध काव्य पर टीका
		रघुवंश पर टीका
	स्तुति-स्तोत्र	भक्तामर-कल्याण मंदिर-श्रीमत् धर्मस्तव-देवा प्रभोः स्तव-ऋषभ-वीरस्तव पर वृत्ति
	अध्यात्म	कृपारसकोश पर वृत्ति
		अध्यात्मकल्पद्रुम (मुनिसुंदर) पर कल्पलता टीका
	खंडन-मंडन	कुमताहिविषभंगुलि (धर्मसागर का खंडन) १६७१
साधु सुंदर	व्याकरण-कोष	उक्ति रत्नाकर (प्राकृत सम संस्कृत शब्द संग्रह) १६७०-७४
		धातुपाठ पर धातुरत्नाकर सटीक १६८०
		टीका क्रियाकल्पलता

तेजपाल	कल्प	दीपालिका कल्प पर अवचूरि
संघ विजय	आगमिक	कल्पसूत्र दीपिका
चारित्रसिंह	व्याकरण	कातंत्र विभ्रम पर अवचूर्णि १६७५
		विचार षट्त्रिंशिका (गजस्वर कृत दंडक पर वृत्ति) १६७५
श्रीपति	ज्योतिष	जातक कर्म पद्धति
		जिन वृषभ समवरण प्रकर
		भविक प्रकर
देव विमल गणि (श्रीपति के शिष्य)	काव्य	हीरसौभाग्य काव्य सटीक
सुमति हर्ष	ज्योतिष	जातककर्मपद्धति (श्रीपति) टीका
		बृहत्पर्वमाला(ताजिक सार टीका)
		गणककुमुद कौमुदी (भास्कर कृत कर्ण कुतूहल पर टीका)
जय विजय	आगमिक	कल्पसुत्र पर कल्प दीपिका १६७७
रामचन्द्र सूरि		दशवैकालिक वार्तिक १६७८
सहजकीर्ति गणि	व्याकरण	सारस्वत व्याकरण पर टीका १६८१
		समद्वीपि शब्दार्णव व्याकरण-
		ऋजुप्राज्ञ व्याकरण प्रक्रिया
		एकादिशतपर्यन्त शब्दसाधनिका
		नाम कोश (छकांड)
	कल्प	कल्पमञ्जरी
	स्तुति	महावीर स्तुति वृत्ति
		अनेक शास्त्रसार समुच्चय
साधु सुन्दर		पार्श्वनाथ स्तुति
उदयकीर्ति	व्याकरण	पदव्यवस्था (विमल कीर्ति)टीका १६८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राज सुन्दर		चतुर्दशी-पाक्षिक विचार १६८४
		पार्श्व स्तुति (जिसमें प्रत्येक चौथा चरण भक्तामरके श्लोकों का प्रथम चरण है।)
देवसागर गणि	कोश	अभिधान चिन्तामणि पर व्युत्पत्ति रत्नाकर टीका १६८६
गुण विजय	काव्य	विजय प्रशस्तिका शेष भाग पूरा किया और पूरे काव्य पर विजय दीपिका टीका लिखी १६८८
चरित्र विजय गणि	आगमिक	कल्पकल्पलता टीका
भाव विजय	आगमिक	उत्तराध्ययन टीका १६८१
	दार्शनिक	षट्त्रिंशत् जल्प विचार
	चरित्र	चम्पक माला चरित्र
महिमसिंह गणि	काव्य	मेघदूत पर टीका १६१३
श्रीविजय गणि	,,	रघुवंश पर टीका, कुमार संभव पर टीका
जिन विजय	व्याकरण	वाक्य प्रकाश सावचूरि कथारूप में १६१४
विनय विजय उपाध्याय	आगमिक	कल्पसूत्र सुबोधिका १६१६
		लोक प्रकाश
	दार्शनिक	नयकर्णिका, षट्त्रिंशत्जल्पसंक्षेप
	व्याकरण	हेमलघु प्रक्रिया सटीक १७१०
	काव्य	इन्दुदूत
	स्तुति स्तोत्र	शान्ति सुधारस, अर्हन्नमस्कार स्तोत्र
		जिनसहस्र नाम
वित्तरुचि	आगमिक	षडावश्यक सूत्र पर व्याख्या १६१७

माणिक्यचन्द्र	स्तोत्र	कल्याण मंदिर दीपिका
दानचन्द्र	कथा	ज्ञान पञ्चमी कथा (वरदत्त-गुणमंजरी कथा) १७००
पद्मसागर	आगमिक	जीवाजीवाभिगम सूत्र पर टीका १७००
नयकुञ्जर	आगमिक	प्रवचनसार
धन विजय	सुभाषित	आभाणशतक १६१६
वादिचन्द्र सूरि	काव्य	पवनदूत
१६४८ के करीब (प्रभाचन्द्र के शिष्य)	चरित्र	यशोधर चरित्र १६५७
	पुराण	पार्श्वपुराण १६४०
	प्रकीर्णक	ज्ञानसूर्योदय
विक्रम (सांगण के पुत्र)	चरित्र	नेमिदूत-नेमचरित्र
भट्टारक शुभ चन्द्र		अंगपन्नति (प्राकृत)
	दार्शनिक	तत्त्वनिर्णय, स्वरूप संबोधन टीका, षड्वाद
	व्याकरण	चिन्तामणि व्याकरण (प्राकृत)
	आगमिक	स्वामि कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका १६१३
		नित्य महोद्योत (आशाधर) टीका
		पार्श्वनाथ काव्य (वादिराज) पंजिका टीका
	कथा-चरित्र	चन्द्रप्रभ-पद्मनाभ-जीवंधर चरित्र चंदना कथा, नंदीश्वर कथा, करकंडु चरित्र १६११
	पुराण	पांडव पुराण १६०८
	स्तुति-स्तोत्र	त्रिंशत् चतुर्विंशति पूजापाठ, सिद्धचक्रव्रतपूजा, सरस्वती पूजा, चिन्तामणि यंत्र पूजा, कर्मदहन विधान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणधरवलयपूजा, पल्यव्रतोद्यापन
१२३४
व्रतोद्यापन, अध्यात्मपद टीका
सर्वतोभद्र टीका, अनेक स्तोत्र
खंडन-मंडन संशयवदनविदारण (श्वेतांबर खंडन)
अपशब्द खंडन

अठारहवीं शताब्दी

आनन्दघनजी — आनन्द घन बहत्तरी (गुजराती)

यशोविजयजी

दीक्षा १६८८, स्व० १७४३
नयविजय के शिष्य
विनय विजय उ. के गुरुबंधु

अध्यात्म — अध्यात्ममतपरीक्षा, अध्यात्म सार, अध्यात्मोपनिषद् आध्यात्मिक मत दलन (स्वोपज्ञटीका)

उपदेशरहस्य (सटीक), ज्ञानसार, परमात्मपंचविंशतिका, परम ज्योतिपंचविंशतिका, वैराग्य कल्पलता, अध्यात्मोपदेश ज्ञानसारावचूर्णि

दार्शनिक — अष्टसहस्री विवरण
अनेकान्त व्यवस्था
ज्ञानबिन्दु, जैननर्कभाषा, देव धर्मपरीक्षा, द्वात्रिंशत् द्वात्रिंशिका, धर्मपरीक्षा, नयप्रदीप, नयोपदेश, नयरहस्य, न्याय खण्डखाद्य वीरस्तव, न्यायालोक, भाषारहस्य, शास्त्रवार्तासमुच्चय टीका—स्याद्वाद कल्पलता उत्पाद व्ययधौव्यसिद्धिटीका ज्ञानार्णव, अनेकान्त प्रवेश, आत्मख्याति,

तत्त्वालोकविवरण, त्रिसूत्र्यालोक, द्रव्यालोकविवरण, न्याय बिन्दु, प्रमाण रहस्य, मंगलवाद वादमाला, वाद महार्णव, विधिवाद, वेदान्तनिर्णय, सिद्धान्ततर्क परिष्कार, सिद्धान्तमञ्जरी टीका, स्याद्वादमञ्जुषा—स्याद्वाद मंजरीटीका, द्रव्यपर्याययुक्ति

आगमिक — आराधकविराधकचतुर्भंगी, गुरुतत्त्वविनिश्चय, धर्मसंग्रहटिप्पन, निशाभक्तप्रकरण, प्रतिमाशतक, मार्गपरिशुद्धि
यतिलक्षण समुच्चय, सामाचारी प्रकरण, कूपदृष्टान्तविशदीकरण, तत्त्वार्थ टीका, अस्पृशद्गतिवाद

योग — योगविंशिका टीका, योग दीपिका (षोडशक वृत्ति), योग दर्शन विवरण

कर्मशास्त्र — कर्मप्रकृति टीका, कर्मप्रकृति लघुवृत्ति।

स्तोत्र — ऐन्द्रस्तुति चतुर्विंशतिका, स्तोत्रावलि, शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तोत्र समीकापार्श्वनाथ स्तोत्र, आदिजिन स्तवन, विजयप्रभसूरि स्वाध्याय, गोडीपार्श्वनाथ स्तोत्रादि,

व्याकरण — तिङन्तान्वयोक्ति

अलंकार — अलंकारचूडा मणि टीका
काव्य प्रकाश टीका

छन्द — छन्दश्चूडामणि

प्रकीर्णक — शठप्रकरण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेघविजय उपाध्याय	**व्याकरण**	चन्द्रप्रभा (हेमकौमुदी) व्याकरण १७५७
	काव्य	देवानन्दाभ्युदयमहाकाव्य १७३९
		माघकाव्य पूर्ति (अखीर के सब अन्तिम पदों को लेकर)
		मेघदूत समस्या लेख (पादपूर्ति)
		दिग्विजय महाकाव्य
		शान्तिनाथ चरित्र महाकाव्य (नैषध के पदों को लेकर)
		सप्तसंधान महाकाव्य सटीक १७६०
	कथा-चरित्र	विजयदेव माहात्म्य
		लघुत्रिषष्ठिचरित्र (५००० श्लोक
		पंचमी कथा
		पंचाख्यान–पंचतंत्र
	स्तुति स्तोत्र	पंचतीर्थ स्तुति (एक के पांच अर्थ- पाँच तीर्थों के वर्णन)
		अर्हद्गीता (३६ अध्याय)
		भक्तामर पर टीका
	ज्योतिष	उदय दीपिका
		वर्ष प्रबोध–मेघ महोदय
		रमल शास्त्र, हस्त संजीवन सटीक
	मंत्र-तंत्र	वीसायंत्र विधि
	अध्यात्म	मातृका प्रसाद, ब्रह्मबोध
		युक्तिप्रबोध (मूलप्राकृत) सटीक
	खंडन मंडन	धर्ममंजुषा (स्थानकवासी खंडन)
हितरुचि	**चरित्र**	नल चरित्र
हर्ष नन्दन सुमति कल्लोल	**आगमिक**	स्थानांग वृत्ति (अभयदेव) पर विवरण

शान्तिसागर गणि	**आगमिक**	कल्पकौमुदी १७०८
दानचन्द्र	**कथा**	मौन एकादशी कथा
जिन विजय	**स्तोत्र**	कल्याणमन्दिर टीका
कल्याणसागर सूरि १६७०-१७१८	**व्याकरण**	मिश्रलिंग कोश (लिंग निर्णय)
विनयसागर	**व्याकरण**	भोज व्याकरण (काव्य में)
		वृद्धचिंतामणि (सारस्वत सूत्र काव्य में)
महिमोदय	**ज्योतिष्**	ज्योतिष् रत्नाकर १७२२
यशस्वत् सागर	**दार्शनिक**	जैन सप्तपदार्थी १७५७, प्रमाण-वादार्थ १७५१
		वादार्थ निरूपण, स्याद्वाद मुक्तावली
	प्रकीर्णक	विचार षड्त्रिंशिका पर अवचूरि १७२१
		भावसप्ततिका १७४०, स्तवन रत्न
	ज्योतिष	ग्रहलाघव (गणेशकृत) वार्तिक १७६०
		यशोराजिराजपद्धति (जन्म-कुंडली विषयक
हरित रुचि	**वैद्यक**	वैद्यवल्लभ १७२६
मान विजय		धर्मसंग्रह
उदय चन्द्र		पाण्डित्य दर्पण
मतिवर्धन		गौतम पृच्छा पर सुगम वृत्ति १७३८
लक्ष्मी वल्लभ	**आगमिक**	उत्तराध्ययन वृत्ति
		कल्पसूत्र पर कल्पद्रुमकलिका
	उपदेश	धर्मोपदेश पर वृत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नय विमल	आगमिक	प्रश्न व्याकरण टीका
	चरित्र	श्रीपाल चरित्र
मान विजय		धर्म परीक्षा
लब्धिचन्द्र गणि	ज्योतिष्	जन्मपत्री पद्धति १७५१
रंग विजय	इतिहास	गुर्जर देश भूपावलि १७६५
दान विजय	आगमिक	कल्पसूत्र-दानदीपिका टीका १७५०
	व्याकरण	शब्दभूषण पद्यबद्ध १७७०
	उपदेश	उपदेश माला पर वृत्ति १७८१
हंसरत्न	स्तोत्र	शत्रुंजय माहात्म्योल्लेख (धनेश्वर-कृत शत्रुंजय माहात्म्य से)
भावप्रभसूरि	दार्शनिक	नयोपदेश (यशोवि.) टीका
	स्तोत्र	भक्तामर समस्या पूर्ति सटीक १७११
		प्रतिमा शतक
विमल सूरि	उपदेश	उपदेश शतक १७९३
तेजसिंह		सिद्धांत शतक १७९८, दृष्टान्त शतक १७९८
भोजसागर	आगमिक	द्रव्यानुयोग तर्कणा सटीक

उन्नीसवीं शताब्दी

रूपचन्द्र	काव्य	गौतमीय महाकाव्य १८०७
	प्रकीर्णक	गुणमाला प्रकरण
मयाचन्द्र	दार्शनिक	ज्ञान क्रियावाद १८०४
फतेन्द्रसागर		ोलीराज १८२२
जिनलाभ सूरि	उपदेश	आत्म प्रबोध
विजय लक्ष्मी सूरि	,,	उपदेश प्रासाद
पद्मविजय गणि	चरित्र	जयानन्द चरित्र (गद्य)

	आगमिक	जीव विचार वृत्ति १८५०, परम समय सार विचार संग्रह
	दार्शनिक	तर्कसंग्रह फक्किका १८५४
	काव्य	गौतमीय काव्यमाला
क्षमाकल्याण उपाध्याय	कथा चरित्र	चातुर्मासिक होलिका पर्व कथा १८३५
		यशोधर चरित्र, अक्षय तृतीया कथा
		मेरुत्रयोदशी व्याख्या, श्रीपाल चरित्र व्याख्या
		समरादित्य चरित्र
	प्रकीर्णक	खरतर पट्टावलि १८३०
		सूक्त मुक्तावलि, प्रश्नोत्तर सार्ध शतक
		पर्युषणाष्टाह्निका, विचारशत बीजक
		सूक्त रत्नावलि वृत्ति
जिनकीर्ति		श्रीपाल चरित्र संस्कृत से ाकृत १८६८
उमेदचन्द्र		प्रश्नोत्तर शतक
जिमहेम सूरि शिष्य	आगमिक	सिद्धान्त रत्नावलि
कस्तूरचन्द्र	आगमिक	ज्ञातासूत्र वृत्ति १८९९

बीसवीं शताब्दी

ऋद्धिसागर	दार्शनिक	निर्णय प्रभाकर
विजय राजेन्द्र सूरि	आगमिक	अभिधान राजेन्द्र कोश १९४६-८६
न्याय विजय (न्याय-तीर्थ, न्याय विशारद)	दार्शनिक	प्रमाण परिभाषा सटीक १९६९ (न्यायालंकार वृत्ति)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्यायतीर्थ प्रकरण
न्यायकुसुमाञ्जलि (काव्य में)
१९७०
अनेकान्त विभूतिः

अध्यात्म — अध्यात्मतत्त्वालोक १९७५
अञ्झत्तत्तालोओ १९९४

प्रकीर्णक — महात्म विभूतिः, जीवनामृतम्, जीवनहितम्, जीवनभूमिः, वीरविभूतिः, दीनक्रन्दनम्, जीवनपाठोपनिषद्, भक्तगीतम्
विजय धर्मसूरि श्लोकाञ्जलिः
गांधी प्रशस्तिः
महेन्द्र स्वर्गारोहः, दीक्षाद्वात्रिंशिका, विद्यार्थिजीवनरश्मिः, आत्महितोपदेश
आश्वासनम् ।

'SANMATI' PUBLICATIONS

	Lord Mahavira by Dr. Bool Chand, M.A., Ph.D.	Rs. 4/8/
	गुजरात का जैन धर्म—मुनि श्री जिनविजय जी	बारह आने
3.	विश्व-समस्या और व्रत-विचार—डॉ० बेनीप्रसाद	चार आने
4.	Constitution	4 Ans.
5.	अहिंसा की साधना —श्री काका कालेलकर	चार आने
6.	परिचयपत्र और वार्षिक कार्यविवरण	चार आने
7.	Jainism in Kalingadesa—Dr. Bool Chand	4 Ans.
8.	भगवान् महावीर—श्रीदलसुखभाई मालवणिया	चार आने
9.	Mantra Shastra and Jainism—Dr. A. S. Altekar	4 Ans.
10.	जैन-संस्कृति का हृदय—पं० श्री सुखलालजी संघवी	चार आने
11.	भ० महावीरका जीवन–पं० श्री सुखलालजी संघवी	" "
12.	जैन तत्त्वज्ञान, जैनधर्म और नीतिवाद ले०–पं० श्री सुखलालजी तथा डॉ० राजबलि पाण्डेय	" "
13.	आगमयुग का अनेकान्तवाद—श्री दलसुखभाई मालवणिया	आठ आने
14–15.	निर्ग्रन्थ-सम्प्रदाय—श्री सुखलालजी संघवी	एक रुपया
16.	वस्तुपाल का विद्यामण्डल—प्रो० भोगीलाल सांडेसरा	आठ आने
17.	जैन आगम—श्री दलसुखभाई मालवणिया	दस आने
18.	कार्यप्रवृत्ति और कार्यदिशा	आठ आने
19.	गांधीजी और धर्म ले० पं० श्री सुखलालजी और दलसुख मालवणिया	दस आने
20.	अनेकान्तवाद—पं० श्री सुखलाल जी संघवी	बारह आने
21.	जैन दार्शनिक साहित्य का सिंहावलोकन पं० दलसुखभाई मालवणिया	दस आने
22.	राजर्षि कुमारपाल–मुनि श्री जिनविजयजी	आठ आने
23.	जैनधर्म का प्राण–श्री सुखलालजी संघवी	छः आने
24.	हिन्दू, जैन और हरिजन मंदिर प्रवेश ले० श्री पृथ्वीराज जैन M.A.	सात आने
25.	Pacifism & Jainism—Pt Sukhlalji	8 Ans.
26.	छठे वर्ष का कार्य-विवरण	दो आना
27.	जीवन में स्याद्वाद—श्री चन्द्रशंकर शुक्ल	बारह आना

The Secretary,
JAIN CULTURAL RESEARCH SOCIETY
BENARES HINDU UNIVERSITY.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'SANMATI' PUBLICATIONS

1.	**World Problems and Jain Ethics** by Dr. Beni Prasad	6 Ans.
2.	**Lord Mahavira** by Dr. Bool Chand, M.A., Ph.D.	Rs. 4/8/
3.	**विश्व-समस्या और व्रतविचार** डॉ० बेनीप्रसाद	चार आने
4.	**Constitution**	4 Ans.
5.	**अहिंसा की साधना** —श्री काका कालेलकर	चार आने
6.	**परिचयपत्र और वार्षिक कार्यविचरण**	चार आने
7.	**Jainism in Kalingadesa** Dr. Bool Chand	4 Ans.
8.	**भगवान् महावीर**— श्री दलसुखभाई मालवणिया	चार आने
9.	**Mantra Shastra and Jainism**–Dr. A. S. Altekar	4 Ans.
10.	**जैन-संस्कृति का हृदय**—पं० श्री सुखलालजी संघवी	चार आने
11.	**भ० महावीरका जीवन**—पं० श्री सुखलालजी संघवी	,, ,,
12.	**जैन तत्त्वज्ञान, जैनधर्म और नीतिवाद** ले०-पं० श्री सुखलालजी तथा डॉ० राजबलि पाण्डेय	,, ,,
13.	**आगमयुग का अनेकान्तवाद**–श्री दलसुखभाई मालवणिया	आठ आने
14–15.	**निर्ग्रन्थ-सम्प्रदाय**—श्री सुखलालजी संघवी	एक रुपया
16.	**वस्तुपाल का विद्यामण्डल**—प्रो० भोगीलाल सांडेसरा	आठ आने
17.	**जैन आगम**—श्री दलसुखभाई मालवणिया	मूल्य दस आने
18.	**कार्यप्रवृत्ति और कार्यदिशा**	आठ आने
19.	**गांधीजी और धर्म** ले० पं० श्री सुखलालजी और दलसुख मालवणिया	दस आने
20.	**अनेकान्तवाद**—पं० श्री सुखलालजी संघवी	बारह आने
21.	**जैन दार्शनिक साहित्य का सिंहावलोकन** पं० दलसुखभाई मालवणिया	दस आने
22.	**राजर्षि कुमारपाल**-मुनि श्री जिनविजयजी	आठ आने
23.	**जैनधर्म का प्राण**- श्री सुखलालजी संघवी	छः आने

जैन संस्कृति संशोधन मंडल

बनारस हिन्दू युनिवर्सीटीः बनारस

Jain Education International For Private & Personal Use Only